12

मसीह में नया जीवन, 2

कुलुस्सियों 3:5–14

3:5-14 की एक समीक्षा

पौलुस ने 3:5–14 का आरम्भ एक के बाद एक अवश्य माननीय बातों के साथ करते हुए यह दिखाने के लिए कि ये आज्ञाएं उसकी पिछली बातों पर आधारित थीं, ''इसलिए'' (*oun*) का इस्तेमाल किया। कुलुस्से के लोग मसीह के साथ जी उठे थे, सांसारिक नियमों से मर गए थे और महिमा में मसीह के साथ दिखाई देने के लिए राह देख सकते थे; ''इसलिए'' उनका जीवन इसके अनुसार होना आवश्यक था। वे नये लोग थे। इसलिए उन्हें नये लोगों के रूप में रहना आवश्यक था। वे नये थे, परन्तु कच्चे थे इसलिए उन्हें आत्मिक प्रौढ़ता की ओर बढ़ने की आवश्यकता थी। पौलुस ने व्यक्तिगत स्तर पर इस बात को समझा कि यह ऐसा ही है; मसीह के लिए मिशनरी होने के कई साल बाद वह अभी भी मसीही प्रौढ़ता के उच्च चिह्न तक पहुंचने की तलाश में था (फिलिप्पियों 3:13, 14)।

शारीरिक आवेगों को मारना आवश्यक था और इस कारण उन्हें इन मसीही लोगों को वश में रखने की अनुमति नहीं थी। पौलुस उन्हें संसार के व्यर्थ फलहीन होने को पहचानना और यह समझाना चाहता था कि संसार के पास देने को कुछ नहीं है। उन्हें उन तक पहुंचने और आनन्द करने के लिए स्वर्गीय वास्तविकताओं की ओर देखना और महिमा को देखना आवश्यक था। उनके मनों में जीवन के इस विचार को डालने के बाद पौलुस ने उन्हें स्वर्गीय महिमा तक पहुंचने के लिए बढ़ने और उन बातों को निकालने के लिए व्यावहारिक गुण बताए।

कुलुस्सियों के लिए नकारात्मक गुणों को उतारकर (आयतें 5–11) सकारात्मक गुणों को पहनना (आयतें 12–14) आवश्यक था। नकारात्मक सूची को दो भागों में बांटा गया है। पहले भाग में शारीरिक आवेग हैं, जिन में विशेष रूप में काफ़िर लोग लगे रहते थे (आयत 5)। उन्हें परमेश्वर के क्रोध के कारण इन्हें उतार देना आवश्यक था (आयत 6)। दूसरे भाग में अस्वीकार्य गुण हैं (आयतें 8, 9), जिन्हें पौलुस के पाठकों को वश में रखना सीखना आवश्यक था क्योंकि उन्होंने अपने पुराने मनुष्यत्व को उतारकर नये को पहन लिया था (आयतें 9, 10)।

अन्य पत्रों में पौलुस ने बुराइयों की ऐसी ही सूचियां दी हैं। उन सूचियों में उन बातों को शामिल किया, जो परमेश्वर के राज्य में प्रवेश से रोकते हैं: अनैतिकता (व्यभिचार) लोभ (लालच) मूर्तिपूजा (गलातियों 5:19; 1 कुरिन्थियों 6:9)। मसीही लोगों को मसीह में भाइयों और बहनों को उन लोगों सहित जो अनैतिक, लोभी (लालची) और मूर्तिपूजक हैं (1 कुरिन्थियों 5:11)। सहित, ऐसे कुछ पापों में लगने वालों के साथ संगति न रखने का निर्देश दिया गया है।

3:5–14 में पौलुस ने यह विनती करने के लिए कि जो उसने बताया था, कुलुस्से के लोग उसे पूरी तरह से पा लें। पूर्ण हुए और निर्णायक कार्य को दिखाते हुए तीन क्रियाओं का इस्तेमाल

किया। पहले तो उन्हें कुछ पापपूर्ण व्यवहारों को ''मार डालना'' आवश्यक था (आयतें 5-7)। दूसरा उसने कुछ बुराइयों के विषय में कहा कि उन्हें ''छोड़ देना'' आवश्यक था (आयत 8, 9)। तीसरा, कुछ गुणों को ''पहनना,'' पूरी तरह से अपने आपको उन से ढक लेना था (आयतें 10-14)।

उनके अनैतिक अतीत को मार डालना (3:5-7)

5इसलिए अपने उन अंगों को मार डालो, जो पृथ्वी पर हैं, अर्थात व्यभिचार, अशुद्धता, दुष्कामना, बुरी लालसा और लोभ को, जो मूर्तिपूजा के बराबर हैं। 6इन ही के कारण परमेश्वर का प्रकोप आज्ञा न मानने वालों पर पड़ता है। 7और तुम भी, जब इन बुराइयों में जीवन बिताते थे, तो इन्हीं के अनुसार चलते थे।

''इसलिए अपने उन अंगों को मार डालो, जो पृथ्वी पर हैं'' (3:5)

उन्हें **उन अंगों को मार** डालना आवश्यक था, **जो पृथ्वी पर हैं** (3:5)। बुरे कामों के साथ-साथ भले काम ''शरीर के अंगों'' (*melē*) हाथ चोरी कर सकते हैं या फिर दूसरों की सहायता कर सकते हैं, पांव व्यक्ति को बुराई के स्थानों में या परमेश्वर की आराधना के लिए ले जा सकते हैं, आंखें प्रलोभन में डालने वाली बातों को पढ़ या देख सकती हैं, या सहायक और प्रोत्साहित करने वाली बातें दे सकती हैं, कान बुरी बातें या अच्छी बातें सुन सकते हैं, और दिमाग पापभरे या पवित्र विचार रख सकता है। इस सब को ध्यान में रखते हुए पौलुस ने शरीर के अंगों के केवल बुरे उपयोग की ही बात की। उसने बताया कि बुराई के लिए मर जाना ही वास्तविक है यदि मसीही लोग इसे वास्तविक मानें। ''ऐसे ही तुम भी अपने आप को पाप के लिए तो मरा, परन्तु परमेश्वर के लिए मसीह यीशु में जीवित समझो'' (रोमियों 6:11)।

इस आयत में अवश्यमाननीय बात ''मार डालो'' (*nekrōsate*) यूनानी भाषा में एक मज़बूत अभिव्यक्ति है, जिसका मूल अर्थ ''मार डालना'' है। पौलुस का निर्देश यह था कि उन्हें अपनी पापपूर्ण शारीरिक गतिविधियों को पूरी तरह से मार डालना आवश्यक था, जो बपतिस्मे के समय खत्म हो जानी चाहिए थीं (रोमियों 6:1-6)। बपतिस्मे के समय वे जीवन के अपने पुराने ढंगों से मर गए थे पर इसका अर्थ यह नहीं था कि उनके जीवनों में प्रलोभन, बुरी बातें मर गई थीं। ये बातें उनके जीवनों में खतरनाक ढंग से फिर से आ सकती थीं। इस कारण उन्हें ''मार डालना'' अर्थात पूरी तरह से मिटा देना आवश्यक था।

एडुअर्ड लोसे ने लिखा है, ''मार डालना। इसका अर्थ है: पुराने मनुष्य को जो बपतिस्मे के समय पहले ही मर चुका है, मर जाए 'तो तुम्हें अपने आपको पाप के लिए मरे हुए और मसीह यीशु में परमेश्वर के लिए जीवित रहना भी आवश्यक है।' ''[1] उसने आगे टिप्पणी की, ''मसीह के साथ मरना जो बपतिस्मे में होता है, 'पृथ्वी के अंगों' को मार डालने के द्वारा अब लागू होना चाहिए।''[2]

पौलुस इन मसीही लोगों को अतीत से मरकर वर्तमान में रहने की चुनौती दे रहा था। ''मर जाने'' के लिए उसका अर्थ शाब्दिक नहीं लिया जाना चाहिए; बल्कि उसके कहने का अर्थ जीने

के ढंगों को वश में करने के प्रतीकात्मक अर्थ में, पूरी तरह से अपने आपको सांसारिक गंदगी से हटाना है। पाप सैक्स, भूख और शारीरिक सुख जैसी शारीरिक इच्छाओं के बिगाड़ से होता है, जिन्हें परमेश्वर के मापदण्डों के भीतर व्यक्त करना अच्छी बात है। कुलुस्सियों को इन शारीरिक आवेगों को सही ढंग से चलाने को कहा गया था, जिससे वे उन्हें वश में रखकर परमेश्वर के लिए उनका इस्तेमाल कर सकें। शरीर अपने आप में बुराई नहीं है, बल्कि वह मार्ग है जिसमें से पापपूर्ण आकर्षण पाते हैं। यह वह माध्यम भी है जिस में से मन अच्छे कार्यों को व्यक्त करता है। व्यक्ति के जीवन में अच्छा या बुरा स्रोत उसी के भीतर है (मत्ती 15:19, 20)। वास्तविक व्यक्ति भीतरी व्यक्ति है।

यदि शरीर के अंग बुरे उद्देश्यों के लिए मरे हुए हैं तो परिणाम उनका एक नया उपयोग और उद्देश्य होना चाहिए। ''अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ: यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है'' (रोमियों 12:1); ''हम अपने आप को शरीर और आत्मा की सब मलिनता से शुद्ध करें, और परमेश्वर का भय रखते हुए पवित्रता को सिद्ध करें'' (2 कुरिन्थियों 7:1)। शारीरिक देह को नहीं, बल्कि पाप के शरीर को मारा जाना आवश्यक है (रोमियों 6:6)। अपने अंगों को अधर्म के माध्यम के रूप में इस्तेमाल करने के बजाय कुलुस्सियों को उनका इस्तेमाल धर्म के औजारों के रूप में करना था, जैसे मरे हुओं में से जी उठने वाले करते हैं (रोमियों 6:13)। इन अंगों का इस्तेमाल अशुद्धता और कुकर्म के दासों के बजाय धार्मिकता के दासों के रूप में किया जाना था (रोमियों 6:19)।

संसार के लोग कुछ हद तक अपने जीवनों में से विभिन्न प्रकार की बुराइयों को निकाल सकते हैं या कुछ गुण बढ़ा सकते हैं, जो पौलुस द्वारा बनाए गए जीवन से मेल खाते हैं। परन्तु मसीही लोगों के रूप में हमारे पास एक सहायक है, जो संसार के पास नहीं है (यूहन्ना 14:17), जो हमें मज़बूत बना सकता है जब हम अपने जीवनों में सिद्ध पवित्रता की तलाश करते हैं (इफिसियों 3:16; 2 कुरिन्थियों 7:1)। संसार ऐसी तलाश स्वार्थी कारणों के लिए कर सकता है परन्तु मसीही लोगों के रूप में हम यह परिवर्तन यीशु को प्रसन्न करने और उसकी महिमा के लिए करते हैं। ऐसा करके हम नैतिक रूप से भ्रष्ट और कलंकित समाज की बदबू को नष्ट करते हैं। 2 कुरिन्थियों 2:15, 16 में पौलुस ने लिखा, ''क्योंकि हम परमेश्वर के निकट उद्धार पाने वालों, और नाश होने वालों, दोनों के लिए मसीह की सुगन्ध हैं। कितनों के लिए तो मरने के निमित्त मृत्यु की गन्ध, और कितनों के लिए जीवन के निमित्त जीवन की सुगन्ध ...'' हैं।

''व्यभिचार, अशुद्धता, दुष्कामना, बुरी लालसा'' (3:5)

पौलुस की पहली सूची में नैतिक पाप (आयत 5) और दूसरी सूची में चरित्र और स्वभाव के पाप (आयतें 8, 9) में इन बुराइयों को उतारकर और मसीही गुणों को पहनकर (आयतें 12–14) कुलुस्से के लोगों ने उसमें जीवन की विशेषताओं को अपना लेना था। जिनमें उन्होंने बपतिस्मा लेकर प्रवेश किया था। पहली सूची वाली बुराइयों पर परमेश्वर का क्रोध और डर मिलता है (रोमियों 1:29–31; 1 कुरिन्थियों 6:9, 10; गलातियों 5:21; इफिसियों 5:5)। यह वह व्यवहार है, जिनमें कुलुस्से और अन्य स्थानों के मसीही लोग अपने काफिर अतीत के दौरान लिप्त थे।

पहले उसने व्यभिचार लिखा और *porneia* शब्द का इस्तेमाल किया। जिसमें से पोर्नोग्राफी शब्द मिलता है। अन्य संस्करणों में इस शब्द का इस्तेमाल ''फोर्निकेशन'' (KJV; NKJV; NRSV) या ''सैक्सुअल अनैतिकता'' (NIV; TNIV) किया गया है। ''सेक्सुअल अनैतिकता'' या सैक्सुअल पथभ्रष्टता का विचार ''अनैतिकता'' से कहीं बेहतर अनुवाद है, जिसका अर्थ अति व्यापक है। *porneia* केवल अनुचित सेक्सुअल सम्बन्धों का अर्थ देता है, परन्तु यह व्यभिचार तक सीमित नहीं है, जो दो लोगों के बीच शारीरिक सम्भोग है, जिनका आपस में विवाह नहीं हुआ है। इसके बजाय जो शब्द पौलुस ने इस्तेमाल किया उसमें हर प्रकार का अलग सैक्सुअल व्यवहार जैसे पुरुष समलैंगिकता, स्त्री समलैंगिकता, पशुगामिता, व्यभिचार वेश्यागमन और उनके बीच सेक्स आ जाता है, जिनका आपस में विवाह न हुआ हो। नये नियम में और स्थानों पर इस शब्द के विभिन्न नाम मिलते हैं। जो कि ऐसे संदर्भ में मिलते हैं, जहां कि ऐसी व्यवहार की निंदा की जाती है।[3] प्रकाशितवाक्य में यूहन्ना ने अपोकलिप्टिक बाबुल के साथ बुराई में भागीदार और संगति के सम्बन्ध में प्रतीकात्मक अर्थ में इसका इस्तेमाल किया है (प्रकाशितवाक्य 14:8; 17:2, 4; 18:3; 19:2)।

यूनानी संज्ञा शब्द *moicheia* (''व्यभिचार''[4]) और यह क्रिया शब्द *moicheuo* (''व्यभिचार करना''[5]) *porneia* ''[सैक्सुअल] अनैतिकता'' से न उलझाया जाए। इनका इस्तेमाल विवाहित व्यक्ति के अविवाहित के या किसी विवाहित के साथ जो अकेला है, भी सैक्सुअल संभोग के लिए किया जाता है। *porneia* व्यापक शब्द है, जिसमें *moicheia* और *moicheuo*[5] भी शामिल हो सकते हैं।

पौलुस ने कुलुस्सियों को उसके साथ संगति न रखने का निर्देश दिया, जो लोग पोर्निया में लगे हैं (1 कुरिन्थियों 5:11)। उसने उन्हें चेताया कि व्यभचारी लोग ''परमेश्वर के राज्य में प्रवेश'' करने न पाएंगे (1 कुरिन्थियों 6:9, 10) और उन्हें [सैक्सुअल] अनैतिकता से भागने को कहा (1 कुरिन्थियों 6:18)। गलातियों 5:19–21 में उसने शरीर के कामों में सबसे पहले (व्यभिचार) यानी नैतिकता को लिखा।

यह सिखाने के बजाय कि सेक्स की इच्छाएं मसीही लोगों में न रहें, पौलुस ने समझाया कि इन समस्याओं को काबू में रखा जाए, (फोर्निकेशन) से निपटने के लिए जो लोग सेक्स की अपनी इच्छाओं को काबू में नहीं रख सकते उन्हें विवाह कर लेना चाहिए। ताकि वे परमेश्वर के मापदण्डों के भीतर रहकर सेक्स के सम्बन्धों का आनन्द ले सकें (1 कुरिन्थियों 7:1–5)।

सेक्स की परिस्थिति में अगले दो शब्दों को अशुद्धता और दुष्टकामना को मिलाया जा सकता है। (*akatharsia*) किसी ऐसी बात को कहा जाता है जो किसी अर्थ में साफ़ नहीं है कि यह गंदा या मैला है। जैसे शरीर की गंदगी या कब्र की चीज़ें (मत्ती 23:27)। नैतिकता भ्रष्टता और अशुद्धता के प्रतीकात्मक अर्थ में इस्तेमाल करने पर आम तौर पर पोर्निया से जोड़ा जाता है। गलातियों 5:19 में इसे शरीर के काम के रूप में बताया गया है (देखें 2 कुरिन्थियों 12:21; इफिसियों 5:3)। इस शब्द का इस्तेमाल पवित्रता (पवित्र होना) (1 थिस्सलुनीकियों 4:7) और धार्मिकता (रोमियों 6:19) के विपरीत आप्राकृतिक और अव्यवहारों (रोमियों 1:24) में इस्तेमाल किया जाता है।

''दुष्कामना'' (*pathos*) में वे बेकाबू इच्छाएं आ जाती हैं, जो व्यक्ति को गुलाम बना

देती हैं। यह शब्द 3:5 में, रोमियों 1:26 में (''नीच कामनाएं'') और 1 थिस्सलुनीकियों 4:5 (''अभिलाषा'') मिलता है। बाइबल के बाहर के अधिकतर उपयोगों में इसका अर्थ है ''जो अनुभव किया गया, सहा गया हो'' जैसा कष्ट यीशु द्वारा क्रूस पर भोगा गया। स्तोइकी लोग इस शब्द का अर्थ भावनाओं से प्रभावित व्यक्ति के लिए करते थे, जो स्थिर जीवन तक नहीं पहुंच सकता था। यहां पर इसका इस्तेमाल सेक्स की अत्यधिक भावनाएं, काम की आग की बुराई और अनियन्त्रित सेक्स की इच्छाओं के लिए किया गया है, जो अनैतिकता को दर्शाती हैं। ''सेक्स की अनैतिकता'' में शारीरिक कार्य सम्मिलित होता है जबकि ''दुष्कामना'' उन इच्छाओं को कहा गया है जो मन में इकट्ठा हुई हैं, और व्यक्ति को शारीरिक अनैतिक कार्यों की ओर ले जाती हैं।

बुरी लालसा दो यूनानी शब्दों *kakē* (''बुरी'') और *epithumia* (''इच्छा'') का अनुवाद है। यह तय करने के लिए कि कोई विशेष ''इच्छा'' अच्छी है या बुरी संदर्भ का होना आवश्यक है। यहां पर यह संकेत देते हुए कि पौलुस के कहने का अर्थ पापपूर्ण इच्छाएं था ''इच्छा'' को ''बुरी'' के साथ नया रूप दिया गया है।

epithumia का मूल अर्थ कुछ करने या पाने की तड़प होने के अर्थ में ''किसी बात पर अपना मन लगाना'' है। इस शब्द का इस्तेमाल ''लोभ'' के बुरे अर्थ में किया जाता है, जैसा कि दस आज्ञाओं में (देखें रोमियों 7:7; 13:9) और बुरी इच्छाओं (1 कुरिन्थियों 10:6; गलातियों 5:17; याकूब 4:2) की मनाही की गई थी। पौलुस ने इफिसियों के चांदी, सोने या वस्त्र का ''लोभ'' नहीं किया था (प्रेरितों 20:33)। यीशु ने इस शब्द का इस्तेमाल अवैध सेक्स की इच्छाओं के सम्बन्ध में किया (मत्ती 5:28)। उसने बताया कि मन में व्यभिचार के विचारों को रखना व्यभिचार करने जितना ही पापपूर्ण है। पाप करने का एकमात्र ढंग शारीरिक रूप में सम्मिलित होना ही नहीं, बल्कि किसी स्त्री को देखकर शारीरिक सम्भोग की इच्छा पालना भी पाप है। पौलुस ने कुलुस्सियों को ऐसी इच्छाओं को मार डालने का निर्देश दिया।

अन्य संदर्भों में *epithumia* का अर्थ भली मंशा या तड़प हो सकता है।[6] इसका एक उदाहरण उस व्यक्ति की इच्छा है जो अध्यक्ष के रूप में सेवा करने की इच्छा करता है। क्योंकि पौलुस ने लिखा कि वह भले काम की ''इच्छा करता'' है (1 तीमुथियुस 3:1)।

''और लोभ को जो मूर्तिपूजा के बराबर है'' (3:5)

पौलुस के अगले शब्द *pleonexia* का अनुवाद KJV में **लोभ** किया गया है परन्तु NASB में आम तौर पर इसका अनुवाद ''लालच'' किया गया है।[7] KJV और NASB दोनों में एक ही मूल शब्द *pleonektēs* का अनुवाद ''लोभी'' किया गया है (1 कुरिन्थियों 5:10, 11; 6:10; इफिसियों 5:5)। यह जितना किसी की आवश्यकता हो या जो उसका बनता हो उससे अधिक इच्छा करने के सम्बन्ध में लालची और लोभी होना है। यह सुनिश्चित करने के लिए कि केवल सेक्स के पाप ही इस शब्द के लिए प्रासंगिक नहीं होंगे, ''पौलुस ने आगे कहा, जो मूर्तिपूजा के बराबर है।'' यीशु ने अपने चेलों को चेतावनी दी, ''हर प्रकार के लोभ से अपने आप को बचाए रखो'' (लूका 12:15)।

किसी चीज़ को पाने, इस्तेमाल करने या अनुभव करने की अत्यधिक इच्छा उस चीज़ को मूर्ति बना देती है। जब कोई कामना के स्रोत को इतनी बेताबी से पाने पर ध्यान देता है तो यह

उसकी श्रद्धा की बात बन जाती है। इस लोभ को सेक्स की आकृतियों के रूप में दिखाया जाए या किसी और इच्छा के रूप में जो उस सेवा और समर्पण का सम्मान देती है। जो एक परमेश्वर की है तो यह मूर्तिपूजा बन जाती है। धन से प्रेम एक उदाहरण है क्योंकि यह लालच पर आधारित है और "सब प्रकार की बुराइयों की जड़" (1 तीमुथियुस 6:10)।

पौलुस ने लिखा कि सुसमाचार सुनाने का उसका उद्देश्य लालच या धनवान बनने के इरादे से नहीं था (1 थिस्सलुनीकियों 2:4, 5)। कुरिन्थुस में कुलुसियों ने "परमेश्वर के वचन में मिलावट" (2 कुरिन्थियों 2:17) से अपना लालच दिखा दिया था।

मूर्तिपूजा एक महामारी थी, जो इस्राएल की आराधना में चुपके से आती रहती थी। परमेश्वर कड़ाई से इसकी निंदा करता था और इसके विरुद्ध लोगों को चेताने के लिए भविष्यवक्ताओं को भेजता रहता था। दाऊद ने एक बड़ी बात की जो शायद मूर्तिपूजा के लिए परमेश्वर की चेतावनी को दर्शाती है: "जो व्यर्थ वस्तुओं पर मन लगाते हैं, उन से मैं घृणा करता हूं" (भजन संहिता 31:6)। इस्राएल के मूर्तियां बनाने के सम्बन्ध में यशायाह ने लिखा, "उस समय तुम लोग सोने चान्दी की अपनी-अपनी मूर्तियों से जिन्हें तुम बनाकर पापी हो गए हो, घृणा करोगे" (यशायाह 31:7)। उसने और कहा, "जो लोग खुदी हुई मूरतों पर भरोसा रखते, उनको पीछे हटना और अत्यन्त लज्जित होना पड़ेगा" (यशायाह 42:17; देखें यिर्मयाह 10:14)। यहेजकेल के द्वारा पूजा की इन वस्तुओं को "घिनौनी मूर्तों" कहा (यहेजकेल 5:11)।

दस आज्ञाओं में परमेश्वर ने स्पष्ट कहा था कि इस्राएली मूर्तियों की पूजा न करें (निर्गमन 20:3-5; व्यवस्थाविवरण 5:7-9)। मसीही लोगों को भी उनकी पूजा न करने की चेतावनी दी गई है (देखें प्रेरितों 15:20)। जीवन में धन कमाने का मुख्य लक्ष्य रखने वाले लोग परमेश्वर की सेवा से बढ़कर धन को अपना ईश्वर, अपनी मूर्ति बनाकर प्राप्त कर लेते हैं। आरम्भिक कलीसिया को निर्देश दिया गया था, "कि तुम मूर्तों के बलि किए हुओं से, ... परे रहो" (प्रेरितों 15:29) और मूर्तियों की पूजा से बचो (देखें 1 कुरिन्थियों 10:14; गलातियों 5:20, 21; 1 यूहन्ना 5:21)।

उपासना में मूर्तियों और प्रतिमाओं का इस्तेमाल करने वाले लोग मूर्तिपूजा के विरुद्ध परमेश्वर की चेतावनी का उल्लंघन भी कर रहे हैं। परमेश्वर ने मूसा को आराधना में स्वर्ग या पृथ्वी की किसी भी आकृति का इस्तेमाल न करने का कारण दिया था: "जब यहोवा ने तुम से होरेब पर्वत पर आग के बीच में से बातें की तब तुम को कोई रूप न देख पड़ा" (व्यवस्थाविवरण 4:15)। परमेश्वर अदृश्य है (कुलुस्सियों 1:15; 1 तीमुथियुस 6:16) इस कारण उसकी आराधना भी बिना किसी भौतिक आकृति वाले अदृश्य जीव के रूप में होनी आवश्यक है। आत्मा होने के कारण उसकी आराधना आत्मा और सच्चाई से होनी आवश्यक है (यूहन्ना 4:23, 24)। कोई भी चीज़ जिसे मनुष्य बना सकता है हू-ब-हू परमेश्वर से मेल नहीं खा सकती और न ही उसकी आराधना में मनुष्य की किसी चीज़ का इस्तेमाल किया जाना चाहिए।

"इन ही के कारण परमेश्वर का प्रकोप आज्ञा न मानने वालों पर पड़ता है" (3:6)

प्रकोप यूनानी शब्द *orgē* से निकला है और इसका अनुवाद "क्रोध" भी हो सकता है (देखें 3:8)। परमेश्वर का क्रोध पुराने नियम की पुस्तकों में मुख्य विषय है।[8] "परमेश्वर का

प्रकोप'' में भी यही बात लागू होती है।[9] नया नियम परमेश्वर के क्रोध और प्रकोप के गुणों वाला भी है।[10] प्रकोप परमेश्वर की विशेषता है, जिससे इनकार नहीं किया जा सकता, जैसा कि पुराने और नये दोनों नियमों में स्पष्टता से दिखाया गया है (देखें ''और अध्ययन के लिए: 'परमेश्वर का प्रकोप' [3:6]''।)

परमेश्वर के प्रेम, कृपा और भलाई पर विचार करते रहने से कुछ लोगों के मन से उसके क्रोध और प्रकोप की बात निकल गई है। नॉस्टिक लोगों की शिक्षा थी कि पुराने नियम का परमेश्वर प्रकोप का परमेश्वर था और वह नये नियम का प्रेमी परमेश्वर नहीं है। कठोर दण्ड जो व्यवस्था को तोड़ने वालों को परमेश्वर ने दिया था उसे इस बात का प्रमाण माना जाता था कि पुराने नियम का परमेश्वर नये नियम के परमेश्वर से अलग है।

ऐसा निष्कर्ष यीशु के क्रोध (मरकुस 3:5) और हनन्नयाह और सफीरा (प्रेरितों 5:1–10), हेरोदेस (प्रेरितों 12:21–23), इलीमास (प्रेरितों 13:6–11) को दिए गए परमेश्वर के दण्ड की उपेक्षा करता है। यह बुराई करने वालों के प्रकोप भरे अन्त के विवरण को ध्यान में नहीं रखता (रोमियों 2:6–11)। यीशु और पुराने और नये नियमों का परमेश्वर एक ही स्वभाव के हैं। यीशु आज्ञा न मानने वालों को बदला देगा (2 थिस्सलुनीकियों 1:7–9)।

परमेश्वर के प्रकोप का कहर इस्राएल पर मसीही युग के लोगों के लिए चेतावनी और आश्वासन के रूप में दिखाया गया है कि परमेश्वर उन्हें दण्ड देगा। जो उसकी आज्ञा नहीं मानते हों (इब्रानियों 10:28, 29)। इस्राएलियों के विरुद्ध उसके कार्य सब लोगों के लिए उदाहरण हैं कि वह जो उसकी इच्छा का सम्मान नहीं करते या उसे मानते नहीं हैं। ''परन्तु यह सब बातें, जो उन पर पड़ीं, दृष्टान्त की रीति पर थीं: और वे हमारी चेतावनी के लिए जो जगत के अन्तिम समय में रहते हैं, लिखी गईं हैं'' (1 कुरिन्थियों 10:11); ''क्योंकि जो वचन स्वर्गदूतों के द्वारा कहा गया था जब वह स्थिर रहा और हर एक अपराध और आज्ञा न मानने का ठीक-ठीक बदला मिला'' (इब्रानियों 2:2)।

परमेश्वर के क्रोध और प्रकोप को नाराज़गी की विवेकहीन प्रतिक्रिया से न मिलाया जाए। कुछ टीकाकारों ने परमेश्वर के सम्बन्ध में इन शब्दों से दूरी रखी है और इस कारण ''परमेश्वर का विनाश,'' ''भयंकर दण्ड,'' ''परमेश्वर का न्याय,'' और ''परमेश्वर का भयानक दण्ड'' शब्दों का इस्तेमाल किया है। इन अभिव्यक्तियों में वास्तविकता है, परन्तु वे बुराई करने वालों के सम्बन्ध में परमेश्वर की सोच को सही ढंग से नहीं दिखाते हैं।

चाहे अजीब लग सकता है पर प्रकोप प्रेम के कारण हो सकता है। अपनी पत्नी से अत्यधिक प्रेम करने वाला व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति के द्वारा उसे छोड़ देने पर प्रकोप से भर सकता है। पत्नी का उसे छोड़ जाने नहीं आती यदि वह उससे प्रेम न करता हो। अपने प्रेम के कारण परमेश्वर उनके साथ जो वैसे पापपूर्ण कार्यों में लगकर जिसकी सूची पौलुस ने दी शैतान के पीछे लगकर उसे छोड़ देते हैं, परमेश्वर अपने क्रोध को दिखाता है (1 यूहन्ना 3:8)।

''इन ही के कारण परमेश्वर का प्रकोप आज्ञा न मानने वालों पर पड़ता है'' (3:6)

उसने परमेश्वर के प्रकोप को क्रिया शब्द *erchomai* (पड़ता) की निश्चितता को दिखाया। आयत 6 में *erchomai* और इफिसियों 5:6 में *erchomai* वर्तमानकाल में है।

(चाहे यह भविष्य की घटना की बात करता है), कुछ विद्वानों का निष्कर्ष है कि पौलुस के कहने का अर्थ परमेश्वर का प्रकोप वर्तमान में उन लोगों पर है जो उसकी आज्ञा नहीं मानते हैं। विलियम हैंड्रिक्सन की व्याख्या है, "जिसे कई बार 'भविष्यवक्त का वर्तमान काल' (तुलना यूहन्ना 4:21; 14:3) में पौलुस इस तथ्य पर ज़ोर देता है कि परमेश्वर के प्रकोप का पड़ना उनके पास जाना जो ऐसे पापों में रहते हैं, इतना पक्का है कि यह ऐसा है जैसे प्रकोप पहले ही आ चुका हो।"[11]

परमेश्वर का प्रकोप भविष्य में हुए दण्ड से पूरी होने वाली वर्तमान वास्तविकता है (1 थिस्सलुनीकियों 1:10)। "जो पुत्र पर विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसका है; परन्तु जो पुत्र की नहीं मानता, वह जीवन को नहीं देखेगा, परन्तु परमेश्वर का क्रोध उस पर रहता है" (यूहन्ना 3:36)।

विद्वान इस पर संदेह करते हैं कि **आज्ञा न मानने वालों** वाक्यांश मूल धर्मशास्त्र में था या नहीं। यूनाइटेड बाइबल सोसायटीज़ द्वारा बनाए गए यूनानी नये नियम में इसको शामिल करने के सम्बन्ध में ब्रूस मैज़गर ने कहा है, "... कमेटी के अधिकतर लोगों ने धर्मशास्त्र में शब्दों को बरकरार रखने का निर्णय लिया, परन्तु कुलुस्सियों ने उनकी वास्तविकता के सम्बन्ध में थोड़ा संदेह होने का संकेत देने के लिए उन्हें सीधे कोष्ठकों में रखा।"[12]

इस वाक्यांश के विभिन्न रूप अलग-अलग अनुवादों में मिलते हैं (NASB; KJV; NKJV; TEV) अन्य अनुवादों में इसे मिटा दिया गया है परन्तु मार्ज़िन नोट्स में इसका उल्लेख किया गया है (1977 NASB; ASV; NEB; NIV; TNIV; RSV; NRSV)। प्रमुख हस्तलिपियां (उदाहरण के लिए साइनेटिकुस अलगज़ैंड्रिनस और बिनसकियुस) इस विचार को वज़न देते हैं कि यह वाक्यांश मूल में था। कुछ टीकाकारों का दावा है कि "इस वाक्यांश के बने रहने के पक्ष में पाण्डुलिपि का काफी प्रमाण है।"[13]

कुलुस्सियों में यह मूल धर्मशास्त्र में है या नहीं पर इफिसियों 5:6 में यह अवश्य मिलता है: "क्योंकि तुम यह जानते हो, कि किसी व्यभिचारी, या अशुद्ध जन, या लोभी मनुष्य की, जो मूर्ति पूजने वाले के बराबर है, मसीह और परमेश्वर के राज्य में मीरास नहीं।" इस कारण हम जानते हैं कि ये शब्द आज्ञा न मानने पर परमेश्वर के न्याय को वास्तविक रूप में दिखाते हैं।

"आज्ञा न मानने वालों" का अर्थ है कि इस समूह के लोग आज्ञा न मानने वाले जीवन का उत्पाद हैं जो अब उनका स्वभाव बन गया है। पौलुस के कहने का अर्थ यह नहीं था कि वे आज्ञा न मानने वाले माता-पिता से जन्मे हैं या उनका स्वभाव पाप पूर्ण है। "के पुत्र" या "का पुत्र" का इस्तेमाल जिसकी भी बात की गई हो उसके स्वभाव को दिखाने के लिए होता है, जैसे "नरक का पुत्र" (मत्ती 23:15), "गर्जन के पुत्र" (मरकुस 3:17), "इस युग के पुत्र" (लूका 16:8), "ज्योति के लोग" (लूका 16:8), "विनाश का पुत्र" (यूहन्ना 17:12), "शांति का पुत्र" (प्रेरितों 4:36), और "शैतान की संतान" (प्रेरितों 13:10)।

"और तुम भी, जब इन बुराइयों में जीवन बिताते थे,
तो इन्हीं के अनुसार चलते थे" (3:7)

कालांतर में कुलुस्से के लोग सांसारिक रीतियों पर चलते थे, परन्तु अब उन्हें ऐसे व्यवहारों से कोई लेना-देना नहीं था। किसी समय वे "निकाले हुए थे और बुरे कामों के कारण मन से

बैरी थे'' (1:21)। इस तथ्य का कि उन्होंने मसीह में नया जीवन आरम्भ कर दिया था, अर्थ यह नहीं था कि उनके लिए उसी ढंग में लौट जाना सम्भव नहीं था, जिसमें वे पहले **चलते थे**। परन्तु यहां इस्तेमाल किया गया क्रिया रूप (*periepatēsate*) संकेत देता है कि कार्य को कालांतर में पूरा होने या खत्म होने के रूप में देखा जाना चाहिए। पौलुस के पत्र के प्राप्तकर्त्ता अपने पापों के लिए मर गए थे इस कारण उनकी पुरानी जीवन शैली खत्म हो गई थी।

''चलते थे'' कार्य या हरकत का संकेत देता है जिसमें वे कालांतर में हो सकते हैं या वर्तमान में चल रहे हो सकते हैं; परन्तु **पहले** (*pote*) से पता चलता है कि वे कालांतर में इन पापों में लगातार चलते थे। चलने का विचार किसी भी विशेष ढंग को बताने को दर्शाता है, चाहे वह अच्छा हो या बुरा। इसका इस्तेमाल अच्छे अर्थ में भी हो सकता है[14] और बुरे अर्थ में भी[15] (देखें रोमियों 8:4)।

जैसे पापों की बात पौलुस ने की है वे लोगों के जीवनों में नियन्त्रण करने वाले हो सकते हैं। कुलुस्से के लोग सैक्सुअल अनैतिकता, अशुद्धता, दुष्कामना, बुरी इच्छा और लोभ में चलते थे। यीशु ने कहा कि पाप में बना रहने वाला व्यक्ति ''पाप का दास है'' (यूहन्ना 8:34)। पौलुस और पतरस ने भी यही सच्चाई बताई (रोमियों 6:16; 2 पतरस 2:19)। पौलुस कुलुस्सियों को यह समझाना चाहता था कि यदि वे चौकस नहीं होते तो वे जीने के अपने पुराने ढंग की बुरी रीतियों में फिर से जा सकते हैं। वे इन पापों में रहते थे और जीवन के ढंग के रूप में उन में चलते थे, परन्तु अब उन्हें उसमें नहीं चलना था।

अभक्तिपूर्ण व्यवहार को उतार देना (3:8, 9)

[8]पर अब तुम भी इन सब को अर्थात क्रोध, रोष बैरभाव, निन्दा और मुंह से गालियां बकना ये सब बातें छोड़ दो। [9]एक-दूसरे से झूठ मत बोलो क्योंकि तुम ने पुराने मनुष्यत्व को उसके कामों समेत उतार डाला है।

''पर अब तुम भी इन सब को छोड़ दो'' (3:8)

3:5 में पौलुस ने कुलुस्सियों को अतीत की अपनी बुराइयों को ''मार डालो'' या ''खत्म कर दो'' के लिए कहा। यह व्यवहार उनके पीछे था परन्तु यदि वे इसे नहीं मारते तो बुराई का बीज फिर से अंकुरित हो सकता था। अन्य आयतें मसीही लोगों को जीवन के पिछले ढंगों को छोड़ देने को कहती हैं (रोमियों 13:12; इफिसियों 4:22, 25; इब्रानियों 12:1; याकूब 1:21)। कुलुस्से के लोग चाहे अपने पिछले पापों से मर गए थे परन्तु उनके लिए पिछली जीवन शैली को फैंककर उसकी जगह जीने का एक नया ढंग अपनाना आवश्यक था। एक अर्थ में उन्होंने अपनी कोठरियों को साफ़ करके नये कपड़े पहनने थे।

मसीह में नई सृष्टि होने के कारण (2 कुरिन्थियों 5:17; गलातियों 3:27) का अर्थ यह नहीं है कि मसीही लोग पाप रहित हो गए हैं। यह हमें केवल एक दायरे में डालता है जिसमें हम पाप रहित होने को अपना लक्ष्य बनाते हैं। हमें अपने जीवनों में संयम दिखाते हुए सभी अनैतिक कार्यों और बुराइयों को छोड़ देना आवश्यक है (आयतें 5, 8, 9)। यह केवल हमें

ही हानि नहीं पहुंचा रहे हैं, बल्कि दूसरों के लिए भी हानिकारक हो सकते हैं और सम्बन्धों में विनाशकारी हो सकते हैं।

''क्रोध'' से दूसरों की हानि हो सकती हैं, और यहां तक कि हत्या करने की इच्छा भी हो सकती हैं। यह लगभग ''प्रकोप'' का समानार्थी शब्द ही है, परन्तु इस बात में उससे अलग है कि यह प्रकोप की तरह न तो अचानक होता है और न विस्फोटक। क्रोध होने पर लोग ऐसी बातें करते और कहते हैं जो उनको दोषी ठहरा सकती हैं (मत्ती 5:22)।

मानवीय ''रोष,'' ''वैरभाव'' से लोगों का व्यवहार घृणात्मक और ईर्ष्या वाला हो जाता है, जिससे वे दूसरों को हानि पहुंचा सकते हैं या दूसरों को हानि पहुंचाते देख उस पर आनन्द कर सकते हैं।

''निंदा'' आम तौर पर ईर्ष्या, रोष और कठोर मनों से निकलती है। निंदा करने वाले दूसरों को बदनाम करते या लोगों को किसी व्यक्ति या वस्तु के लिए बुरा सोचने की कोशिश करते हैं।

''मुंह से गालियां बकना,'' अश्लील भाषा, दूसरों के लिए हानिकारक है। यह लोगों के मनों को बुरे विचारों से भर सकती है या उनके निराश होने का कारण बन सकती है।

झूठ बोलना समाज के लिए हानिकारक हैं क्योंकि यह वह आधार और ढांचा बनाता है जिस पर समाज खड़ा है। यह झूठे व्यक्ति को अविश्वसनीय बना देता और उस भरोसे को खत्म कर देता है, जो दूसरे लोगों ने उसमें रखा हो।

इन आदतों के परिणामों के कारण कुलुस्सियों के लिए उन्हें निकालना आवश्यक था; उन्हें जीवन के अपने सारे व्यवहारों और ढंगों को बदलना आवश्यक था। वह बदलाव जो बपतिस्मे के समय हुआ था (2:11–13), ने पूरी तरह से अतीत को नहीं मिटाया था। उन्नति अब होने वाली थी।

> जैसा कि दिखाया गया है (देखें 2:11, 12), बपतिस्मा लेने के समय कुलुस्सियों ने निर्णायक ढंग से ''पुराने मनुष्य'' (रोमियों 6:6; इफिसियों 4:22) अर्थात ''शारीरिक देह'' को जो अस्तित्व का उनका पुराना ढंग था, अपने पुराने बुरे चाल चलन को, ''अपनी रीतियों सहित'' अर्थात 3:5, 8, 9 में दी गई रीतियों को उतार कर नये मनुष्य, मसीह को (गलातियों 3:27) अर्थात नये स्वभाव को *पहन लिया* था। जो विश्वासियों को मसीह के अंग होने पर मिलता है। इस कारण अब उन्हें भक्तिपूर्ण जीवन के साथ बपतिस्मे के अपने विश्वास को और सजाने दें।[16]

यह सब बातें छोड़ दो (3:8) और बाद में ''पहन लो'' (3:12) अभिव्यक्ति पौलुस की शर्तों को मानने की मज़बूत बातें हैं। यह कुलुस्से के भाइयों के लिए विकल्प नहीं थे, बल्कि शर्तें थीं। पौलुस अपने पाठकों से उन्हें पूरा करने का गम्भीर प्रयास करने की अपेक्षा रखता था। ''ये सब बातें छोड़ दो'' का अर्थ निश्चित रूप में ''मार डालो'' (3:5) या अक्षरशः, ''खत्म कर दो,'' जैसा ही है।

''पर अब तुम भी इन सब को अर्थात क्रोध, रोष वैरभाव,
निन्दा और मुंह से गालियां बकना'' (3:8)

क्रोध *orgē* का अनुवाद है 3:6 में ''प्रकोप'' भी हुआ है।[17] इसमें बहुत अधिक नाराजगी का अर्थ मिलता है, जिसे कई बार गलती करने के लिए दिखाया जाता है, जो दण्ड या बदला हो सकता है। *Orgē* मनुष्य की भावना के लिए इस्तेमाल हो सकता है। परन्तु यहां पर यह शब्द मुख्यतया आज्ञा न मानने और पाप के विरुद्ध परमेश्वर के निर्णय के लिए है (यूहन्ना 3:36; रोमियों 1:18; 13:4; इब्रानियों 3:11; 4:3)। उसका क्रोध न्याय और दण्ड का कारण बनता है।[18] व्यवस्था से ''प्रकोप'' (*orgē*; रोमियों 4:15) आता है। सरकार को बुराई करने वालों पर ''प्रकोप'' लाकर दण्ड देने का अधिकार है। इसलिए मसीही लोगों के लिए सरकार के अधीन होना और ऐसे ''प्रकोप'' (*orgē*; रोमियों 13:4, 5) न सहना आवश्यक है। कुछ परिस्थितियों में मसीही लोगों को क्रोध करने का अधिकार है (इफिसियों 4:26); परन्तु आम तौर पर हमें क्रोधित होने से बचने को कहा गया है (इफिसियों 4:31; याकूब 1:19, 20)। आम तौर पर पवित्र शास्त्र में वर्णित क्रोध संयमित व्यवहार होता है।

अगले शब्द **रोष** (*thumos*) में अति घृणा की गहरी भावनाओं का विचार मिलता है। कुछ मामलों में यह *orgē* का समानार्थी शब्द लगता है। इस कारण इसे अलग अर्थ देना कठिन हो जाता है। इन यूनानी शब्दों के अर्थ कुछ आयतों में इकट्ठे मिलते हैं (रोमियों 2:8; इफिसियों 4:31; प्रकाशितवाक्य 16:19; 19:15)। प्रकाशितवाक्य और रोमियों 2:8 को छोड़ जहां परमेश्वर के क्रोध के लिए इस्तेमाल हुआ है, *thumos* मनुष्य के क्रोध या रोष के लिए इस्तेमाल हुआ है (लूका 4:28; प्रेरितों 19:28; 2 कुरिन्थियों 12:20; गलातियों 5:20; इफिसियों 4:31; कुलुस्सियों 3:8; इब्रानियों 11:27)।

प्रकाशितवाक्य में इसका इस्तेमाल शैतान के प्रकोप (प्रकाशितवाक्य 12:12), अपोकलिप्टिक ''बाबुल के कष्ट'' (प्रकाशितवाक्य 14:8; 18:3), और परमेश्वर के प्रकोप (प्रकाशितवाक्य 14:10, 19; 15:1, 7) के लिए इस्तेमाल हुआ है। *orgē* के साथ जोड़े जाने पर *thumos* का अर्थ गहरा हो जाता है जिसका अनुवाद ''भयानक प्रकोप'' जैसे शब्दों में मिलता है (प्रकाशितवाक्य 16:19; 19:15)। यह परिस्थितियों में बुराइयों की सूचियों में यूनानी शब्द का इस्तेमाल होने पर (2 कुरिन्थियों 12:20; गलातियों 5:20; इफिसियों 4:31; कुलुस्सियों 3:8) गहरी नाराज़गी, ''क्रोध'' या ''रोष'' का सुझाव देता है। यह *orgē* से इस बात में अलग हो सकता है कि यह बदला लेने की इच्छा में अधिक तीव्र और भयानक हो सकता है और इसमें संयमित क्रोध का विचार मिल सकता है (लूका 4:28; प्रेरितों 19:28; इब्रानियों 11:27)।

वैरभाव (*kakia*) मनुष्य की नीच इच्छाओं जैसे दोगलापन, चरित्रहीनता और दुष्टता की अभिव्यक्तियों का वर्णन करता है। यह बुरी इच्छा वाले लोगों के मनों की बुराई और हानिकारक व्यवहार है। वैरभाव वाले लोग नीच सोच वाले, दुर्भावना रखने वाले, दुष्ट और घृणित होते हैं (रोमियों 1:29; इफिसियों 4:31; तीतुस 3:3; 1 पतरस 2:1)। ''एक प्राचीन यूनानी शब्दकोश संकलन करने वाले सियुडस ने *kakia* की परिभाषा इस प्रकार दी: 'अपने पड़ोसी को हानि पहुंचाने की उतावली।' ''[19] यह शब्द ''दूसरों को परेशान देखने के लिए उन्हें हानि पहुंचाने, घाव देने या नष्ट करने की इच्छा'' को दिखाता है।

निंदा (*blasphēmia,* "जिससे अंग्रेजी शब्द" ब्लासफेमी निकला है) का अर्थ दूसरों को आहत करने या बदनाम करने के इरादे से कही गई बात है। जो लोग लोगों के मन में यह डालने के लिए कि वे दूसरों की निंदा करते हैं। निंदा करने में बदनाम करने या नीचा दिखाने के प्रयास में अपमानित करने या नीचा दिखाने के ढंग से बातें करना हो सकता है (देखें मत्ती 12:32)। निंदा करने में इरादा शामिल है: जो जान-बूझकर किसी दूसरों के बारे में बुरा सोचे उसकी निंदा करते हैं। इस शब्द का इस्तेमाल परमेश्वर (प्रकाशितवाक्य 13:6; 16:11, 21), उसके नाम (रोमियों 2:24; 1 तीमुथियुस 6:1; प्रकाशितवाक्य 16:9) उसके वचन (1 तीमुथियुस 6:1; तीतुस 2:5), पवित्र आत्मा (मत्ती 12:31; मरकुस 3:28, 29; लूका 12:10), या अन्य लोगों (तीतुस 3:2) को नीचा करने या उनकी निंदा करने के लिए लागू हो सकता है। *Blasphēmia* के रूप अपराधों की विभिन्न सूचियों में मिलते हैं।[20]

कुछ लोग जान-बूझकर परमेश्वर और अन्य लोगों की निंदा करते हैं। सताव के लिए कुलुस्सियों को तैयार करने के इरादे से पौलुस ने इस पाप की बात की हो सकती है क्योंकि वह नहीं चाहता था कि सताने वाले उन्हें परमेश्वर की निंदा करने के लिए विवश करें। मसीही बनने से पहले प्रेरित पौलुस जो पहले शाऊल था, मसीही लोगों पर निंदा करने का दबाव डालता था (प्रेरितों 26:11)। और स्वयं निंदा करने वाला था (1 तीमुथियुस 1:13)।

मुंह से गालियां बकना (*aischrologia*) यूनानी भाषा के नये नियम में यहां केवल एक बार मिलता है। इसका इस्तेमाल बुरी और गंदी बातचीत, अश्लील चुटकुलों जैसी घटिया बातचीत के लिए किया गया है; जो भद्दी और कामुक भाषा; अपमानजनक भाषा और दुरवचन का सुझाव देता है। इसके अलावा इसका अर्थ गंदी भाषा, गालियां और रूखी भाषा हो सकता है जैसा कि पौलुस ने इफिसियों 5:4 में कहा। ऐसे बोल कुलुस्से के लोगों के मुख से नहीं निकलने चाहिए थे। इसके बजाय जैसा कि पौलुस ने बाद में लिखा उनकी भाषा "सदा अनुग्रह सहित और सलोना" होनी चाहिए थी (कुलुस्सियों 4:6)। याकूब ने लिखा कि एक ही मुंह से अच्छी और बुरी दोनों भाषाओं का निकलना अस्वाभाविक है।

मुंह से, पौलुस ने शायद यह संकेत देने के लिए कि ऐसे विचार, यदि वे दिल में चले जाएं, तो वह मुंह से बाहर नहीं आने चाहिए। ऐसी भाषा से बचने का ढंग अपने विचारों को काबू में रखना है (याकूब 3:9-12)।

"एक-दूसरे से झूठ मत बोलो क्योंकि तुम ने पुराने
मनुष्यत्व को उसके कामों समेत उतार डाला है" (3:9)

आयत 9 पौलुस के लम्बे वाक्यों में से एक का आरम्भ है और यह आयत 11 तक चलती है। यह कहकर कि उसके पाठक एक-दूसरे से **झूठ** (*pseudomai*) न बोले, वह मसीही समाज से बात कर रहा था। ऐसा करके वह यह संकेत नहीं दे रहा था कि गैर मसीही लोगों में झूठ बोलना स्वीकार्य है। "इस कारण झूठ बोलना छोड़कर हर एक अपने पड़ोसी से सच बोले, क्योंकि हम आपस में एक-दूसरे के अंग हैं" (इफिसियों 4:25)। झूठ बोलने वालों के लिए परमेश्वर का ठहराया गया ढंग इस बात को दर्शाता है कि झूठ बोलना उसकी नज़र में कितनी गम्भीर बात है। "पर ... सब झूठों का भाग उस झील में मिलेगा, जो आग और गन्धक से जलती

रहती है: यह दूसरी मृत्यु है'' (प्रकाशितवाक्य 21:8)।

दस आज्ञाओं में झूठ बोलने की मनाही की गई है (निर्गमन 20:16; व्यवस्थाविवरण 5:20)। इस कारण कुछ लोग इसे क्रोध, वैरभाव, निंदा और गालियां बकने से भी अधिक गम्भीर मानते हैं। मसीही लोगों को इस बात की समझ होनी चाहिए कि आयत 8 में दी गई पांच बुराइयां व्यभिचार, बलात्कार और हत्या की तरह ही पाप हैं।

आयतें 9 और 10 में अनुवादित शब्द **उतार डाला** और ''पहन लिया'' अनिश्चित भूतकाल कृदंत है।

> आयतें 9–10 में दो अनिश्चित भूतकाल कृदंत (''उतार डाला'' और ''पहन लिया'' [AB]) को इस दावे के रूप में समझना बहुत अच्छा है कि जो वास्तव में पहले हो चुका है: विश्वास और बपतिस्मे के द्वारा सब मसीही लोगों ने ''पुराने मनुष्यत्व'' को उतारकर (और इससे जुड़ी बुराइयों को जिनका वर्णन, 3:5, 8–9 में है) ''नये मनुष्यत्व को'' (आयतें 12–17 में विस्तार से बताए गए जीवन के उपयुक्त ढंग के साथ) पहन लिया है।[21]

उतार डाला (*apekduomai*) और ''पहन लिया'' (*enduō*) वे शब्द हैं जिनका अर्थ आम तौर पर कपड़े उतारने और पहनने के लिए किया जाता है। **पुराने मनुष्यत्व** को उतार दिया गया है और नये मनुष्यत्व को पहन लिया गया है। कुलुस्सियों के पिछले भ्रष्ट जीवनों की सूची देते हुए जिनका पौलुस ने उल्लेख किया उन्हें उतार दिया जाना था, ये लोग ''मन से बैरी'' होने के कारण ऐसा जीवन बिताते थे (1:21), परन्तु जैसे वे लोग थे अब उन्होंने अपना वह व्यक्तित्व उतार दिया था। उनकी पुरानी गलतियां और व्यवहार अब नहीं रहे थे, क्योंकि ''पुराने मनुष्यत्व'' को उतारकर उसके स्थान पर ''नया मनुष्यत्व'' पहन लिया गया था। रोमियों की पुस्तक में पौलुस ने इसी विचार को व्यक्त किया: ''... हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया, ताकि पाप का शरीर व्यर्थ हो जाए'' (रोमियों 6:6)।

पौलुस ने ''मनुष्यत्व'' का अर्थ व्यक्ति के भौतिक भाग के लिए नहीं बल्कि व्यक्तित्व के लिए किया। जब कोई व्यक्ति मसीही बन जाता है तो पुराना व्यक्ति जिसका जीवन बुराई के साथ भ्रष्ट हुआ था और जो पाप के साथ मरा हुआ था उसे उतार दिया जाना आवश्यक है। धर्मी और पवित्र व्यक्तित्व वाले नये व्यक्ति को पुराने व्यक्ति के स्थान पर लाया जाना आवश्यक है।

एक और जगह पौलुस ने पुराने जीवन को उतारने और नये को पहनने का इस्तेमाल किया है।[22] उसने भावनाओं और कामनाओं सहित (गलातियों 6:14) संसार के लिए (गलातियों 5:24) और शरीर के लिए क्रूस पर चढ़ाए जाने की बात की। उसने भीतरी व्यक्ति के नया होने की बात लिखी (2 कुरिन्थियों 4:16; इफिसियों 3:16)। इसी कतार में पतरस ने लिखा कि मसीही स्त्रियां मन के भीतरी व्यक्तित्व से अपने आपको संवारें (1 पतरस 3:4)। नये भीतरी व्यक्ति को पुराना वस्त्र उतारकर नया बाहरी वस्त्र पहनना आवश्यक है।

मसीह के स्वरूप के अनुसार नया बनना (3:10, 11)

[10]और नए मनुष्यत्व को पहिन लिया है, जो अपने सृजनहार के स्वरूप के अनुसर ज्ञान प्राप्त करने के लिए नया बनता जाता है। [11]उस में न तो यूनानी रहा, न यहूदी, न खतना, न खतनारहित, न जंगली, न स्कूती, न दास और न स्वतन्त्र: केवल मसीह सब कुछ और सब में है।

''और नए मनुष्यत्व को पहिन लिया है'' (3:10)

आयतें 10 और 11 पौलुस द्वारा अपने अन्य पत्रों में कही गई बातों से मेल खाती हैं। उसने लिखा कि गलातियों ने मसीह को ''पहन लिया'' था। मसीह में बपतिस्मा लेने पर व्यक्ति **नये मनुष्यत्व** और मसीह को आत्मिक अर्थ में **पहिन** लेता है। कुलुस्से के लोग मसीह में नये बन गए थे। उन्होंने अपने पुराने वस्त्रों को उतारकर नये वस्त्रों को ''पहिन लिया'' था (2:12, 13; गलातियों 3:27)।

इस परिवर्तन का परिणाम एक अलग जीवन शैली होना था। अतीत के व्यक्ति को जो बेकाबू भावनाओं वाला था, अब नहीं रहना चाहिए, क्योंकि नये व्यक्ति को संयम में रहना था। अपने जीवनों की बुराइयों को अनुमति देने के बजाय कुलुस्सियों को भलाई के लिए आगे बढ़ना आवश्यक था। धनवान जवान हाकिम की समस्या यह नहीं थी कि वह हत्यारा, व्यभिचारी या झूठा साक्षी था, बल्कि उसकी समस्या यह थी कि वह निर्धनों की देखभाल करने जैसे भले काम करने में सक्रिय नहीं था (मत्ती 19:22)।

बहुत से लोग जो मसीह के अनुयायी होने का दावा करते हैं, ने संसार की बुराइयों को उतार दिया है, परन्तु इतना काफ़ी नहीं है। जो लोग यीशु के पीछे चलते हैं उन्हें मसीही सेवा में पाए जाने वाले गुणों को बढ़ाकर अन्य सकारात्मक पहलुओं में लगना आवश्यक है।

कुलुस्से के लोगों ने न केवल नये मनुष्यत्व को पहन लिया था बल्कि वे क्रूस पर मसीह की मृत्यु से बने नये समाज का भाग भी बन गए थे (इफिसियों 2:13)। उसकी मृत्यु ने उन्हें मसीह की एक देह जो कि कलीसिया है, देकर व्यवस्था को मिटाकर यहूदियों और अन्यजातियों के बीच की फूट खत्म कर दी है। फूट के पहले के कारण चाहे जो भी हों, यीशु ने झगड़े को निपटा दिया ताकि वे मसीह में बपतिस्मा लेकर लोग एक देह में अर्थात उसमें एक हो सकें (रोमियों 12:5; 1 कुरिन्थियों 12:13)।

''ज्ञान प्राप्त करने के लिए नया बनता जाता है'' (3:10)

पुराना मनुष्य चाहे उतार दिया गया है और नये को पहन लिया गया है, परन्तु इसके बावजूद नये मनुष्य को आम तौर पर ताजा करते रहना आवश्यक है। **नया बनता जाता** (*anakain-oumenon*) यूनानी भाषा में वर्तमान कृदंत है, जो निरन्तर क्रिया का संकेत देता है। नया व्यक्ति लगातार नया होता जा रहा है। नया व्यक्ति जिसका जन्म बपतिस्मे के समय हुआ, नवजात शिशु की तरह है। पूर्ण विकसित मसीही होने की क्षमता उसमें है पर प्रौढ़ अवस्था तक पहुंचने से पहले बढ़ने के लिए समय आवश्यक है। नया मनुष्य जिसका जन्म बपतिस्मे के समय हुआ एक नवजात के समान है।

नदी की तेज़ धारा में ऊपर की ओर जाने के प्रयास में नाव न चला पाने वाला व्यक्ति धारा में बह जाएगा। ढीले प्रयास से नाव चप्पू चलाने से आगे नहीं बढ़ेगी, क्योंकि इसे आगे बढ़ाने के लिए इतना काफ़ी नहीं है। धारा को पार करने के लिए चप्पू चलाते रहना आवश्यक है। इसी प्रकार से मसीह के पीछे चलने वालों की विशेषता वाले गुणों में मसीही लोगों का बढ़ते रहना आवश्यक है (2 कुरिन्थियों 3:18; 10:15; इफिसियों 4:13, 16; 1 थिस्सलुनीकियों 3:12; 4:9, 10; 2 थिस्सलुनीकियों 1:3; 1 तीमुथियुस 4:15)। पौलुस ने पाया कि मसीह उसके प्राण को प्रतिदिन नयापन देता है (2 कुरिन्थियों 4:16)। उसने सिखाया कि मसीही लोग पवित्र आत्मा की सहायता के द्वारा सामर्थ और नयापन पाते हैं (इफिसियों 3:16; तीतुस 3:5)।

नयेपन से मसीही लोगों को **ज्ञान प्राप्त** होता है। "प्राप्त" इस वाक्यांश में ***eis*** का अनुवाद है जिसमें "में" का मूल अर्थ पाया जाता है। यह लक्ष्य तक पहुंचने या "दिशा" की ओर जाने का सुझाव देता है। पौलुस यह समझा रहा था कि नया मनुष्य उसके स्वरूप के "ज्ञान" में प्रवेश करता है जिसने उसे सृजा है। पौलुस को यह विचार आदि में सृष्टि से मिला हो सकता है (उत्पत्ति 1:26, 27)। नया व्यक्ति मसीह के "स्वरूप" पाने के लिए सृजा गया है और उसे प्रतिदिन नया होने की आवश्यकता है। बिना इस नया होने के नया जीवन खत्म हो जाएगा और वह व्यक्ति अपने पुराने मार्गों में वापस लौट आएगा।

"ज्ञान" (***epignōsis***) का उल्लेख झूठे गुरुओं के विश्वास दिलाने वाले छदम ज्ञान के विपरीत बताया गया है। ज्ञान और मसीह के स्वरूप को पाना दोनों ही बार-बार होने वाले और बढ़ने वाले हैं। जितना कोई यीशु को अधिक जानता है उतना ही अधिक यीशु के जैसा बन सकता है; और जितना वह यीशु के जैसा बनता है उतना ही अधिक उसे उसका ध्यान होगा। मसीही व्यक्ति यीशु के जैसा तभी बन सकता है यदि उसे उसके स्वभाव का ज्ञान है।

"जो अपने सृजनहार के स्वरूप के अनुसार" (3:10)

कुलुस्सियों को **अपने सृजनहार के** ज्ञान को पाकर नया होने की तलाश करना आवश्यक था। नया बनने से ज्ञान मिलना था और ज्ञान से और नया बनने का आधार मिलना था। इस ज्ञान का उद्देश्य उन्हें यीशु के जैसे बनने में सहायता करना था, जिन्हें उन्होंने उसमें नये लोग बनाया था (2 कुरिन्थियों 5:17)। यीशु की मृत्यु की सनातनता में बदलने और मसीह यीशु में परमेश्वर की ऊपरी बुलाहट तक पहुंचने के लिए पौलुस का यह ढंग था (फिलिप्पियों 3:10-14)। चलता रहने वाला नया बनना सच्चे ज्ञान में बढ़ते रहने से हो सकता है। किसी की वास्तविक तस्वीर दिखाने के लिए कलाकार के लिए उसकी विशेषताओं को जानना आवश्यक है। और बड़े अर्थ में यीशु के स्वरूप में बढ़कर नया होने से पहले हमें यह पता होना आवश्यक है कि वह कैसा है।

यीशु में प्रवेश करने और उसे पहनने के बाद (गलातियों 3:27) कुलुस्सियों को अब उसके जैसे बनना था, जिसे उन्होंने आत्मसात कर लिया था। हर परिवर्तित का लक्ष्य यीशु के स्वभाव में बढ़ने के लिए उसे देखते रहना है। 2 कुरिन्थियों 3:18 में पौलुस ने इस लक्ष्य को इस प्रकार व्यक्त किया: "परन्तु जब हम सब के उघाड़े चेहरे से प्रभु का प्रताप इस प्रकार प्रकट होता है, जिस प्रकार दर्पण में, तो प्रभु के द्वारा जो आत्मा है, हम उसी तेजस्वी रूप में अंश-अंश कर के बदलते जाते हैं।" इस लक्ष्य को पाने के लिए हमें अतीत को उतारकर "परमेश्वर द्वारा मसीह

यीशु में ऊपर बुलाए जाने पर ध्यान करना आवश्यक है'' (फिलिप्पियों 3:13, 14)। उसे जिसने जिसे हमें सृजा है उसके गुणों में बढ़ना आरम्भ कर सकते हैं।

> ... नया होना सृजनहार के स्वरूप के अनुसार होता है। इस प्रकार एक ओर वह यह पुष्टि करता है कि यह नई सृष्टि का सवाल है न कि कुछ बुराइयों को त्यागकर कुछ गुणों को मान लेना। दूसरी ओर वह कहता है कि इससे ज्ञान मिलना चाहिए।[23]

कुलुस्सियों को किस ज्ञान की आवश्यकता थी? मूसा की व्यवस्था, जिसमें सीनै पर्वत पर दी गई उसकी वाचा थी (व्यवस्थाविवरण 4:2-8, 13) उनके जीवनों के लिए मानक नहीं होनी थी। यीशु में सारी बुद्धि और ज्ञान है; उसने उन्हें उस में सम्पूर्ण बनाया था और उनके लिए वह ''सब कुछ और सब में'' था (3:11)। उन्हें किसी और की आवश्यकता नहीं थी क्योंकि मसीही जीवन का वास्तविक स्रोत और नमूना यीशु ही है। यहूदी परम्पराओं, रहस्यवादी धर्मों, यूनानी फिलॉस्फी और काफिरों के पास उनके लिए देने को कुछ नहीं था।

आत्मा के द्वारा प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं को दिए गए परमेश्वर के प्रकाशन को पढ़कर लोग मसीह के भेद को ''समझ'' सकते हैं (इफिसियों 3:4)। परमेश्वर कलीसिया में अगुओं और सिखाने वालों को परमेश्वर के पुत्र के ज्ञान के द्वारा ''मसीह के पूरे डील डौल तक'' (इफिसियों 4:13) बढ़ जाने के लिए मसीही लोगों की सहातया के लिए रखता है। यदि हम यीशु के स्वभाव को अपना लें जो कि परमेश्वर का स्वरूप है तो हम पवित्र बन जाएंगे; क्योंकि परमेश्वर पवित्र है (1 पतरस 1:16)।

विश्वासी मसीही होने के बावजूद हमें ऐसी ऊंची भूमि पर नहीं पहुंचना चाहिए जहां हम अपने मसीही चलन से आत्म संतुष्ट हो जाएं। जीने के लिए हमारा उदाहरण यीशु मसीह जो कि मापने वाली छड़ी है, जिससे हम अपनी उन्नति को नाप सकते हैं, हम से बहुत ऊंचा और दूर है। हमें ऊपर चढ़ने और सिद्ध होने की चुनौती मिलती रहती है। परन्तु हम कभी भी उस सिद्धता को जो मसीह में पाई जाती है, बांट नहीं सकते। यीशु वही चाहता है जो सही है, न कि वह जो आसान है।

''उस में न तो यूनानी रहा, न यहूदी'' (3:11)

जिस नयेपन की बात पौलुस ने की, वह पुराने व्यक्ति को नया करना नहीं है क्योंकि पुराना तो मर चुका है। इसके बजाय यह नया व्यक्ति है जिसे नया होते रहने की आवश्यकता है। कार चाहे नई हो पर ड्राइवर तेल की टंकी खाली कर देगा उसे बार-बार भरवाने की आवश्यकता होगी। इसी प्रकार वह बार-बार टायरों को, बैटरी को या अन्य पुर्जों को बदलेगा।

उसमें यूनानी विशेषण शब्द *hopou* का अनुवाद है जिसका अर्थ है ''जहां।'' इस नयेपन को अनुभव करने वाले लोग एक नये आत्मिक क्षेत्र में उसमें ''जहां'' जातीय, राष्ट्रीय, क्षेत्रिय, श्रेणी या सामाजिक अन्तर नहीं पाए जाते हैं। इसका अर्थ यह नहीं है कि मानवीय दृष्टिकोण से यह अन्तर नहीं रहे हैं, परन्तु परमेश्वर के दृष्टिकोण से यह अन्तर खत्म हो गए हैं। मसीही लोगों को परमेश्वर की सोच को अपनाना आवश्यक है (इफिसियों 4:1-3)। हम मसीह में बपतिस्मा लेकर इस नये क्षेत्र में आते हैं जिसमें सब लोग एक हो जाते हैं (गलातियों 3:26-28)। पौलुस

ने 1 कुरिन्थियों 12:13 में भी इस सच्चाई को व्यक्त किया है।

3:5, 8, 9 में पौलुस द्वारा बताई गई बुराइयां फूट डालती हैं और अलग-अलग धार्मिक समूहों में रुकावटें पैदा करती हैं, परन्तु 3:12-14 वाली उसकी सूची के गुण ऐसी फूटों को मिटाने में सहायक हो सकते हैं। इन समूहों में उनके मसीही बनने से पहले चाहे घृणा और झगड़ा पाए जाते हों पर यह अन्तर खत्म हो जाने थे और कुलुस्से के मसीही समाज में नहीं रहने थे।

शायद पौलुस ने आयत 11 में अन्यजातियों का उल्लेख यह ज़ोर देने के लिए किया कि यहूदी लोग परमेश्वर के साथ अपने खड़े होने में दूसरों से पहले नहीं हैं। दोनों सूचियों में पौलुस ने पहले यहूदियों और फिर यूनानियों की बात की (1 कुरिन्थियों 12:13; गलातियों 3:28), जो कि सूची बनाने का उसका सामान्य ढंग था (रोमियों 1:16; 2:9, 10; 3:9, 29, 30; 9:24; 10:12; 1 कुरिन्थियों 1:24)।

इन आयतों में अधिकतर उसने **यहूदी**[यों] और **यूनानी**[यों] (*Hellēn*) यानी यहूदियों और गैर यहूदियों या अन्यजातियों में बांटते हुए लोगों के केवल दो समूह बताए। इस सूची में भी वह यही विचार व्यक्त करना चाहता हो सकता है। परन्तु उसने उस पूरी हद को समझाने के लिए जिसमें मसीह के पूरे समूहों को एक ही स्तर में स्वीकार किया जाता है अन्य समूहों का उल्लेख किया।

पौलुस के कहने का अर्थ यह नहीं था कि मसीह के बाहर अलग-अलग हर समूह को स्वीकार कर लिया जाए और उन्हें वैसे ही रखा जाए, जैसे वे जो मसीह में हैं। जिन रुकावटों का उल्लेख किया गया है वे केवल मसीह में ही दूर होती हैं (गलातियों 3:28)। यीशु ने व्यवस्था की दीवार को गिरा दिया, ताकि वह उन्हें जो उसकी एक देह में हैं क्रूस के द्वारा परमेश्वर के साथ मिला सकें (इफिसियों 2:14-16)। परमेश्वर ने पतरस को समझाया कि वह पक्षपाती नहीं है और मसीही लोगों को यहूदी मसीही और अन्यजाति मसीही के बीच दीवार नहीं बनानी चाहिए (प्रेरितों 10:34, 35; 15:7-11)। कई अवसरों पर उन लोगों की सब श्रेणियों में जो मसीह में हैं, पौलुस एकता लाने का प्रयास करता था।[24]

नये जीवन में प्रवेश करने का ढंग लोगों के हर समूह के लिए एक ही है। यहूदी लोग पापी थे और वे अन्यजातियों से बिल्कुल बेहतर नहीं थे (रोमियों 3:9, 10)। इस कारण परमेश्वर ने उद्धार के लिए (प्रेरितों 15:9, 11; रोमियों 3:22) या परमेश्वर के साथ सम्बन्ध होने में (रोमियों 10:12)। शर्तों में दोनों में कोई अन्तर नहीं किया। "क्योंकि परमेश्वर ने सब को आज्ञा न मानने के कारण बन्द कर रखा ताकि वह सब पर दया करे" (रोमियों 11:32)।

"खतना, न खतनारहित, न जंगली, न स्कूती" (3:11)

खतना शब्द यहूदी मत धारण करने वालों सहित यहूदियों के लिए **खतनारहित** सभी गैर यहूदियों सहित अन्यजातियों के लिए इस्तेमाल किया गया है। पौलुस ने अधिकतर मामलों में "खतनारहित" से पहले "खतना" का उल्लेख किया। क्योंकि ये पहले देने से उनके प्रति जो व्यवस्था के अधीन खतना किए हुए थे, अधिक सम्मान से दिखाता है (देखें रोमियों 4:9-12; 1 कुरिन्थियों 7:18, 19; गलातियों 5:6; 6:15)। परन्तु यह ज़ोर देने के लिए कि मसीह में यह अन्तर नहीं रहता है, उसने दोनों जगह क्रम को उलट दिया (गलातियों 2:7; इफिसियों 2:11)।

1 कुरिन्थियों 7:18 में उसने खतने का उल्लेख पहले किया और फिर आयत 18 में इस क्रम को उलट दिया।

यहूदी लोग संस्कृति लोग में पिछड़े हुए विदेशियों को **जंगली**[यों] औरा **स्कूती**[यों] के रूप में मानते थे जबकि ''खतनारहित'' असभ्य गैर यहूदियों के साथ-साथ सभ्य लोगों को भी कहा गया है। यूनानी लोग सब गैर यूनानी लोगों को, जिनमें सबसे पहले रोमी भी आते थे, जंगली मानते थे। बाद में रोमियों द्वारा यूनानी संस्कृति को अपनाना आरम्भ करने पर उन्हें भी ''यूनानियों'' के रूप में माना जाने लगा। रोमी और यूनानी लोग यूनानी-रोमी संस्कृति के बाहर के सब लोगों को जंगली मानते थे।

''जंगली'' (*barbaros*) शब्द मिलता है, जहां कई बार इसका अनुवाद ''निवासियों'' हुआ है (प्रेरितों 28:2, 4; रोमियों 1:14; 1 कुरिन्थियों 14:11) इस शब्द का इस्तेमाल उनके लिए किया गया है जो अनपढ़ और अस्पष्ट उच्चारण या किसी सभ्य सुनने वाले द्वारा ज्ञात भाषा न बोल पाने वाले के लिए किया जाता है। यीशु ने ''जंगली'' के अन्तर को मिटाकर इसके स्थान पर ''भाई'' शब्द दे दिया।

''जंगली[यों]'' और ''स्कूती[यों]'' दो अलग-अलग समूह नहीं हैं जैसा कि आयत 11 में अन्य जोड़े हैं। स्कूती लोग जंगली थे परन्तु छोटे दर्जे के रूप में उन्हें यहूदियों, रोमियों और यूनानियों द्वारा छोटी किस्म के असभ्य जंगली लोग माना जाता था। ये असभ्य कबीले थे जो काले समुद्र के आस-पास रहते थे। जोसेफ़ ने कहा है कि ये असभ्य लोग थे जो जंगली जानवरों की तरह रहते थे।[25]

स्कूतियों के सम्बन्ध में हेरोदोतस ने लिखा है, ''वे युद्ध में मारे गए पहले शत्रु का लहू पीते और मारे गए लोगों की खोपड़ियों की खाल से रूमाल बनाते और उनकी खोपड़ियों को पीने वाले कटोरे बनाते।'' उनकी सबसे गंदी आदत यह थी कि वे कभी पानी से नहाते नहीं थे।[26] अन्य लेखकों ने उनके बिगड़े हुए स्वभाव की पुष्टि की है। वे चाहे घृणा योग्य लोग थे परन्तु मसीही बन जाने वालों के साथ यीशु के अन्य हर चेले की तरह बराबर माना जाता था। समाज के किसी भी वर्ग के लोग मसीह में एक हो सकते हैं, जहां रुकावटों के रूप में ये वर्ग नहीं पाए जाते। मसीहियत ने इन अन्तरों को मिटाने और सब को एक ही भाइचारे में लाने में सहायता की है।

''न दास और न स्वतन्त्र'' (3:11)

दास और स्वतन्त्र भी मसीह में समानता पा सकते हैं। जिसने उनके बीच की खाई को मिटा दिया है ताकि वे भाईचारे की प्रीति में एक हो सकें। दोनों को क्रूस के कारण मसीह में स्वतन्त्र किया गया है। ''स्वतन्त्र'' जैसा कि पौलुस द्वारा इसका इस्तेमाल किया गया है, उसके लिए लागू हो सकता है जो गुलाम रहा हो। परन्तु इसमें उसे भी शामिल किया जा सकता है, जो कभी गुलाम न रहा हो। चाहे गुलामी की प्रथा उस समय पाई जाती थी परन्तु मसीह में पाए जाने वाले और उसके द्वारा सिखाए जाने वाले समानता और प्रेम के नियम गुलामों को अन्य मसीही लोगों के साथ एक करते थे, जिससे अन्त में गुलामी की प्रथा मिटाने के लिए विजय मिली।

रोमियों के बहुत से गुलाम होते थे जिनमें से अधिकतर युद्ध में बंदी बनाकर लाए जाते थे। ''कानूनी भाषा में कहें तो अरस्तू के अनुसार प्राचीन जगत में गुलाम व्यक्ति नहीं बल्कि सम्पत्ति,

'जीवित औज़ार' होता था। ...''[27] कई बार गुलाम अपने मालिकों से अधिक सभ्य होते थे जो बहुत बार उनके साथ जानवरों जैसा व्यवहार करते थे। कई अपनी स्वतन्त्रता को खरीद सकते थे या विशेष सेवा के लिए उसे पा सकते थे। क्लोदियुस कैसर की माता अंटोनिया के दास फेलिक्स के साथ यही हुआ था।

परमेश्वर ने मनुष्यजाति की भाषा को उलझा दिया, ताकि लोग सारे संसार में बिखर जाएं (उत्पत्ति 11:1-8)। लगता है कि उसने ऐसा इस ढंग से किया कि मनुष्यजाति बंट तो जाए पर एकीकृत पारिवारिक समूहों में बनी भी रहे। लोगों को बिखराने का उसका उद्देश्य यह था कि वे अपनी दुष्ट चालों में सफल न हो सकें। यीशु का काम अलग था। क्योंकि वह परमेश्वर की सेवा करने के लिए धार्मिकता में लोगों को एक करने के लिए आया। वह पृथ्वी की एक जाति में हर किसी को एक करने के लिए नहीं आया। वह अपने चेलों को शुद्ध करने के लिए आया ताकि वह उन्हें अपने साथ एक करके संसार भर के उसके सब मानने वालों का एक भाईचारा बना सके। उसने अपनी एक देह में रखने के लिए फूट के लिए जगह या जुदाई की दीवारें नहीं बनाई।

''केवल मसीह सब कुछ और सब में है'' (3:11)

मसीह सब कुछ और सब में है। सब क्या है? इसका अक्षरशः अनुवाद है ''मसीह'' सब कुछ है और सब बातों में है। यीशु इस अर्थ में ''सब कुछ है'' कि संसार उसी पर निर्भर है क्योंकि उसने अपनी सामर्थ के वचन के अनुसार इसे सृजा और इसे बनाए रखा है (इब्रानियों 1:2, 3)। वह इस बात में ''सब कुछ'' है कि वह मसीही लोगों के लिए आवश्यक हर आत्मिक आशीष प्रदान करता है। वह ''सब बातों'' में है, क्योंकि उसकी उपस्थिति और सामर्थ के द्वारा उसके द्वारा सब कुछ बनाए रखा जाता है (कुलुस्सियों 1:16, 17)। वह ''सब बातों'' में इस बात में है कि उनके लिए जिनमें वह वास करता है हर शारीरिक और आत्मिक आवश्यकता प्रधान की जाती है।

जो कुछ है वह उस सब में ही सब कुछ नहीं है बल्कि वह उनके लिए भी सब कुछ है जिन्हें उसमें नये बनाया गया है। *कौन से* और *कैसे* मसीही हैं यह पूरी तरह से उस पर निर्भर हैं। इस कारण मसीही समुदाय में विभिन्न जातीय तत्वों के बीच रेखा नहीं खींची गई है। मसीह ने अपने लोगों को एक करने के लिए हर आवश्यक चीज़ उपलब्ध करवाई है।

पौलुस ने एक अलंकारिक प्रश्न पूछा, ''क्या मसीह बंट गया?'' (1 कुरिन्थियों 1:13)। यूनानी भाषा में इस प्रश्न को नकारात्मक उत्तर की उम्मीद में पूछा गया है। इसे इस प्रकार से कहा जा सकता है: ''मसीह बंटा नहीं है, क्या वह बंट गया है?'' स्पष्ट उत्तर यह है ''नहीं, वह बंटा नहीं है।'' यदि वह अपने चेलों के लिए सब कुछ है और उन सब में है तो हमें बंटना नहीं चाहिए क्योंकि वह बंटा नहीं है। किसी भी सामाजिक बाधा के बावजूद जो पाई जाती है, मसीही समाज को एक होना चाहिए।

यहां पर ''सब'' के लिए सीमित श्रेणी शायद यह है कि अपने हर अनुयायी सहित वह हर उस चीज़ में है, जो अच्छी है। यह हवाला उन सभी विश्वासियों पर लागू होता है, जिन में वह वास करता है (यूहन्ना 17:23), न कि उसके बाहर की सारी मनुष्यजाति के लिए, जिसमें शैतान वास करता है (यूहन्ना 8:44; 13:27)। वह संसार में सब कुछ है और सब बातों में है, इसलिए

वह मसीही लोगों के लिए सब कुछ है। यदि हम विश्वासी मसीही हैं तो हम जो भी उसके संसार की अच्छी बातें हैं, उसका भाग हैं।

भक्तिपूर्ण गुणों को पहनना (3:12-14)

[12]इसलिए परमेश्वर के चुने हुओं की नाईं जो पवित्र और प्रिय हैं, बड़ी करुणा, और भलाई, और दीनता, और नम्रता, और सहनशीलता धारण करो। [13]और यदि किसी को किसी पर दोष देने का कोई कारण हो, तो एक-दूसरे की सह लो, और एक-दूसरे के अपराध क्षमा करो: जैसे प्रभु ने तुम्हारे अपराध क्षमा किए, वैसे ही तुम भी करो। [14]और इन सब के ऊपर प्रेम को जो सिद्धता का कटिबन्ध है, बान्ध लो।

''इसलिए परमेश्वर के चुने हुओं की नाईं जो पवित्र और प्रिय हैं'' (3:12)

इसलिए (*oun*) पिछली बात ''मसीह सब कुछ और सब में है'' की ओर पीछे को देखता है। मसीह के ''सब में सब कुछ'' होने के उत्तर में कुलुस्सियों को इससे मेल खाते और सर्वपर्याप्त मसीह के अनुकूल गुणों को बढ़ाना आवश्यक था। पौलुस आयतें 9 और 10 में कहे गए अपने कथन की भी बात कर रहा हो सकता है कि उन्होंने पुराने मनुष्यत्व को उतार कर नये मनुष्यत्व को पहन लिया था। नये मनुष्यत्व को पहन लेने के कारण उन्हें उस नये व्यक्ति के गुणों को अपनाते हुए अपने जीवनों में नया स्वभाव लाना आवश्यक था।

कुलुस्से के मसीही लोग **चुने हुए** (*eklektoi*) हैं। चुना जाने के लिए व्यक्ति में कुछ योग्यताएं होना आवश्यक हैं। यहूदा के स्थान पर चुना जाने और मेज की सेवा करने के लिए सात लोगों को चुनने के लिए यही शर्त थी (प्रेरितों 1:21-25; 6:5)। परमेश्वर के चुने हुए के रूप में योग्य होने के लिए व्यक्ति के लिए मसीह में होना आवश्यक है (इफिसियों 1:4)। मसीह में वे लोग हैं जिन्होंने उसमें बपतिस्मा लिया है; इस कारण वे परमेश्वर के चुने हुए हैं। कुलुस्सियों ने बपतिस्मा पाया था (2:12) इसलिए वे चुने हुए लोगों में से थे। परमेश्वर ने उन्हें नहीं चुना है, जो मसीह के बाहर हैं।

यह प्रमाण कि ''चुने हुए'' लोग उद्धार से पहले नहीं चुने गए हैं। चुने हुओं के सम्बन्ध में तीमुथियुस 2:10 में पौलुस के कथन में स्पष्ट है: ''इस कारण मैं चुने हुए लोगों के लिए सब कुछ सहता हूं, कि वे भी उद्धार को जो मसीह यीशु में है, अनन्त महिमा के साथ पाएं।'' यदि चुने हुओं का उद्धार पहले ही हो चुका था तो पौलुस को इतनी कठिनाइयां सहने की क्या आवश्यकता थी कि वे भी उद्धार पा सकें। वह इस्राएल के उद्धार के लिए प्रार्थना क्यों करता (रोमियों 10:1-3) यदि उद्धार पाए हुओं की संख्या संसार की सृष्टि से पहले ही तय की गई थी। जैसा कि संकेत मिलता है कि चुने हुए और उद्धार पाए हुए लोग वे हैं जो मसीह में हैं। लोगों को बपतिस्मे के द्वारा मसीह में आने की पसन्द दी गई है ताकि वे परमेश्वर के चुने हुओं में हो सकें।

परमेश्वर ने पहले से ठहराया है कि जो लोग मसीह में आते हैं उन्हें मसीह के स्वरूप के अनुसार बदल दिया जाएगा (रोमियों 8:29)। ये लोग उसके चुने हुए लोग हैं। यानी वह समूह जिसे वह आरम्भ से जानता था कि वे सच्चाई पर (2 थिस्सलुनीकियों 2:13) अर्थात अपने

उद्धार के सुसमाचार (इफिसियों 1:13) पर विश्वास करेंगे। जो लोग इस सुसमाचार की आज्ञा नहीं मानते हैं, उन्हें अनन्त विनाश से दण्ड दिया जाएगा (2 थिस्सलुनीकियों 1:7–9)। लोगों के पास आज्ञा मानने या न मानने की पसन्द है और जो भी आज्ञा मानने का इच्छुक है उसे ''जीवन का जल सेंतमेंह'' मिलता है (प्रकाशितवाक्य 22:17)। परमेश्वर चाहता है कि लोग उसकी इच्छा को मानें (2 पतरस 3:9), परन्तु वह उसे मानने के लिए किसी को विवश नहीं करेगा। यीशु यरूशलेम पर रोया था (लूका 19:41), क्योंकि उसकी इच्छा थी कि वे उसके पास आएं परन्तु वे उसके पास आने को तैयार नहीं थे (मत्ती 23:37)। यीशु ने उन्हें चुना था परन्तु उन्होंने उसका इनकार कर दिया। हर किसी को खुली छूट दी गई है कि वह उसकी आज्ञा मानें या न।

इन चुने हुओं के वर्णन के लिए दो अतिरिक्त शब्दों का इस्तेमाल किया गया है। यूनानी शब्द *hagioi* जिसका अनुवाद यहां ''पवित्र'' हुआ है, 1:2, 4, 12, 26 में भी ''पवित्र लोग'' हुआ है। ''प्रिय'' *ēgapēmenoi* का इस्तेमाल पौलुस द्वारा कहीं और इस संक्षिप्त रूप में हुआ है (1 थिस्सलुनीकियों 1:4; 2 थिस्सलुनीकियों 2:13), जिसका अर्थ है कि उनसे परमेश्वर द्वारा प्रेम किया गया था और किया जा रहा था। यह दो शब्द परमेश्वर के साथ उनके सम्बन्ध का विवरण देते हैं।

ये भाई परमेश्वर के चुने हुओं में थे, ''इसलिए'' उन्हें इस प्रकार से जीवन बिताना आवश्यक था, जैसे परमेश्वर के ''पवित्र और प्रिय'' हों। वे परमेश्वर के लिए विशेष थे। वे आम और साधारण नहीं थे, बल्कि सांसारिक बुराइयों से अलग किए हुए पवित्र लोग थे, इसलिए उन्हें उच्च और सबसे बढ़िया आत्मिक गुणों का नमूना पेश करना आवश्यक था। इन गुणों ने उन्हें अपने समाज में सबसे भले लोग बना देना था।

'' बड़ी करुणा, और भलाई, और दीनता, और नम्रता, और सहनशीलता धारण करो'' (3:12)

कुलुस्सियों ने पहले ही ''नए मनुष्यत्व को पहिन लिया'' था (3:10) परन्तु इससे उनके व्यक्तित्वों में एकदम से बदलाव नहीं आया था। उन्हें कुछ अनुग्रहों को पहनना आवश्यक था, जो नये व्यक्ति के लिए अनुकूल थे। उन्हें भद्दे पापपूर्ण आवारागर्दी से मसीह के राज्य के सम्माननीय नागरिकों में बदल दिया गया था। वे अपने पुराने मैले कपड़ों को पहने नहीं रख सकते थे बल्कि उन्हें नये जीवन के बेदाग कपड़े पहनने आवश्यक थे।

धारण करो (*endusasthe*) एक आज्ञा है जो कुलुस्सियों को अपने आपको उन गुणों को अपना लेने की आवश्यकता पर ज़ोर देती है, जो पवित्र शास्त्र में मिलती है। यह उस बदलाव के साथ मेल खाती है जिसने उन्हें परमेश्वर के पवित्र और चुने हुए प्रिय लोग बना दिया है। जो कुछ वे बन गए थे उसके कारण अब उन से आत्मिक रूप में अलग होने की उम्मीद थी।

''पौलुस द्वारा जिन गुणों की यहां सराहना की गई है, वे उन बुराइयों का विपरीत हैं जिनकी अभी-अभी निंदा की गई थी-सामाजिक पाप नहीं, बल्कि सामाजिक अनुग्रह।''[28] आयतें 8 और 9 में बुराइयों का न होना और आयतें 12 से 14 में गुणों का होना मसीह व्यवहार के लिए आवश्यक ही नहीं, बल्कि एकता के लिए अनिवार्य भी है। क्रोध, रोष, वैरभाव, निंदा और मुंह से गालियां बकना, और झूठ बोलना लोगों के समुदाय को फाड़ सकते हैं जबकि इनका न होना

एकता का सार है। करुणा, भलाई, दीनता, नम्रता, सहनशीलता, क्षमा और प्रेम वह बुनियाद हैं जिस पर एकता हो सकती है। इन गुणों को नज़रअन्दाज़ करना और बुराई करना उलझन और फूट ही का कारण बन सकता है।

जिन गुणों को कुलुस्सियों को अपने जीवनों में लाना था वे तीन श्रेणियों में बांटे जाते हैं: (1) दूसरों के प्रति व्यवहार–करुणा, भलाई, दीनता और प्रेम; (2) अपने प्रति व्यवहार–दीनता; और (3) बुरे व्यवहार के प्रति प्रतिक्रिया–धीरज, सहनशीलता, और क्षमा। पहले पांच गुणों में व्यवहार और अन्तिम तीन गुणों में दूसरों को जवाब शामिल हैं। कुलुस्सियों को कुछ गुणों को ''पहनना'' (3:12–14) और कुछ बातें करना आवश्यक था (3:15–17)। इसी प्रकार से, जिस प्रकार से बुराइयों का प्रभाव अपने और दूसरों के ऊपर पड़ता है, वैसे ही गुणों का अपना प्रभाव होता है।

करुणा यहां पर हृदय (NASB) के लिए इस्तेमाल हुआ यूनानी शब्द *kardia* नहीं है। यह शब्द *splagchnon* है जिसका मूल अर्थ ''अंतड़ियां'' (देखें KJV) है। लगभग हर बार में बहुवचन रूप में इस्तेमाल किया जाने वाला यह शब्द व्यक्ति के आंतरिक भाग की बात करता है। यहूदा की ''अंतड़ियां'' (प्रेरितों 1:18)। फिलेमोन में इसी शब्द को ''मन/हृदय/जी'' किया गया है (फिलेमोन 7, 12, 20 पर चर्चा देखें)। और फिलेमोन में 1 यूहन्ना 3:17 में परन्तु अन्य मामलों में इसका अनुवाद (''करुणा''; लूका 1:78) ''मन'' किया गया है (2 कुरिन्थियों 6:12; 7:15; फिलिप्पियों 1:8; 2:1)। पौलुस ने यहां पर इसका इस्तेमाल करुणा के लिए किया। यूनानी और इब्रानी सोच में अंतड़ियों, जिगर, फेफड़ों और हृदय जैसे अलग–अलग भागों से जुड़ी हुई अलग–अलग भावनाएं हैं। यूनानी लोग अंतड़ियों को भावनाओं का स्थान मानते थे जैसे क्रोध और प्रेम। इब्रानी लोग अंतड़ियों को लगाव, सहानुभूति, दया और प्रेम का स्रोत मानते थे।

इस शब्द का एक रूप (*splagchnizomai*) जिसका अर्थ ''तरस खाना'' है, आवश्यकता के समय दूसरों के प्रति मन को दिखाता है (मत्ती 9:36; 14:14; मरकुस 1:41; 8:2; लूका 7:13)। यीशु ने इसका इस्तेमाल दूसरों की आवश्यकताओं से परेशान होने वालों की भावनाओं के वर्णन का दृष्टांत देते हुए किया (मत्ती 18:27; लूका 10:33; 15:20)।

भलाई (*oiktirmos*) की अभिव्यक्ति दया, तरस, लगाव और लोगों की समस्याओं के प्रति जागरूकता में दिखाई जाती है। यह शब्द दूसरों के लिए सहानुभूति की भावना को दिखाता है, विशेषकर उनके लिए जो कष्ट में हैं या जिन्हें सहायता की आवश्यकता है। यह कोमल और मधुर लोगों की स्थिति है जो परेशान लोगों को देखकर अत्यधिक परेशान हो जाती है।

Splagchnon और *oiktirmos* का मिलकर अर्थ मूलतया ''करुणा की अंतड़ियां'' बनता है। इनका बेहतरी अनुवाद ''दिल से करुणा'' है।

दीनता (*chrēstotēs*) जिसका अर्थ सहायक होना, उदारता, कोमलता, ईमानदारी या भलाई है, परमेश्वर के स्वभाव के गुण का वर्णन करता है (लूका 6:35; रोमियों 2:4; 11:22; 2 कुरिन्थियों 6:6; इफिसियों 2:7; तीतुस 3:4)। और वह गुण है जिसे मसीही लोगों को बढ़ाना चाहिए (गलातियों 5:22)। यीशु ने अपने चेलों के मानने के लिए दयालुता के नमूने के रूप में परमेश्वर का नाम लिया (लूका 6:35)। भजन संहित 14:1 में से उद्धृत करते हुए पौलुस ने लिखा, ''कोई भलाई करने वाला [*chrēstotēta*] नहीं, एक भी नहीं'' (रोमियों 3:12)।

मसीही लोगों में शायद यह गुण पूरी रीति से नहीं हो सकता परन्तु परमेश्वर की सहायता से हम इसे कुछ हद तक बढ़ा सकते हैं।

अगला गुण **दीनता** (*tapeinophrosunē*) इस शब्द का इस्तेमाल अपने प्रति छोटे व्यवहार के लिए किया जाता है, जो दिखावटी विनम्रता (''आत्महीनता''; 2:18, 23), घमण्ड, अकड़ और शेखी का विपरीत है। कुलुस्सियों की पुस्तक के अलावा इसका इस्तेमाल नये नियम में चार और बार हुआ है (प्रेरितों 20:19; इफिसियों 4:2; फिलिप्पियों 2:3; 1 पतरस 5:5)। शब्द के अन्य रूप यूनानी भाषा में मिलते हैं। मत्ती 11:29 में यीशु ने अपने आपको ''मन में दीन'' कहा। पौलुस ने लिखा कि यीशु ने अपनी मृत्यु में अपने आपको ''दीन'' किया जिसके द्वारा उसको ऊंचा किया गया (फिलिप्पियों 2:8, 9)। परमेश्वर घमण्डियों का विरोध करता है, परन्तु उन पर अनुग्रह करता है, जो ''दीन'' होते हैं और उन्हें ऊंचा करता है (1 पतरस 5:5, 6)।

दीन लोगों को आम तौर पर यूनानियों और शेष काफिर संसार द्वारा तुच्छ जाना जाता है क्योंकि उन्हें निर्बल और कायर माना जाता था। परन्तु बाइबल के विचार में दीनता दूसरों के सम्बन्ध में किसी के शालीन मूल्यांकन को और इस समझ को दिखाता है कि परमेश्वर की दृष्टि में सब लोग एक समान महत्व रखते हैं। दीन लोग इस बात को मानते हैं कि कोई भी श्रेष्ठ योग्यता जो लगता है कि उन्हें मिली है वह परमेश्वर की ओर से है और उनका अपना कुछ भी नहीं है (1 कुरिन्थियों 4:7)।

सूबेदार द्वारा यीशु के पास अपने मित्रों को भेजने पर दीनता को ही दिखाया गया था कि ''मैं इस योग्य नहीं, कि तू मेरी छत के तले आए'' (लूका 7:6)। यीशु के एक दृष्टांत में चुंगी लेने वाले ने दीनता को ही दिखाया, जब उसने कहा, ''हे परमेश्वर मुझ पापी पर दया कर'' (लूका 18:13)। पौलुस ने इफिसुस के प्राचीनों को बताया कि उसने पूरी दीनता से परमेश्वर की सेवा की (प्रेरितों 20:19)। उसने फिलिप्पियों को समझाया, ''... पर दीनता से एक-दूसरे को अपने से अच्छा समझो'' (फिलिप्पियों 2:3)।

नम्रता (*prautēta*) की परिभाषा ''अपने ही महत्व, नम्रता, दीनता, शिष्टाचार, विचारशीलता, पिछले अनुकूल अर्थ में शिष्टता से अत्यधिक प्रभावित न होने के गुण'' में की जाती है।[29] पौलुस आम तौर पर इसे मसीही लोगों द्वारा चाहे जाने वाले और बढ़ाए जाने वाले गुण के रूप में मिलाता था।[30] जो लोग नम्र हैं वे अपने विचारों की स्थिति से पहचाने जाकर सदैव स्नेही और दयाशील होते हैं। वे कटु, अशिष्ट या रूखे नहीं होते। इसका अर्थ यह नहीं है कि वे दुर्बल होते हैं। दुर्बल व्यक्ति दो सौ पाउंड का भार एक मेज़ से उठाकर उसे फर्श पर ध्यान से नहीं रख पाएगा; केवल बलवान व्यक्ति ही ऐसा कर सकता है। जब लोग क्रूर, निर्दयी, तिरस्कार भरे या अशिष्ट हों तो उनके साथ नम्र होने के लिए भीतरी शक्ति का होना आवश्यक होता है।

इस सूची में सबसे अन्तिम गुण **सहनशीलता** है। यहां पर इस्तेमाल किए गए यूनानी शब्द (*makrothumia*) की परिभाषा ''दूसरों के प्रति उत्तेजना, धैर्य, धीरज से सहने के योग्य होने की स्थिति'' के रूप में की जाती है।[31] जो लोग धीरजवंत हैं वे कठिन परिस्थितियों में बुराई को सहन करने और मज़बूत इरादा रखने वाले लोग होते हैं। परमेश्वर और यीशु द्वारा इस शब्द का इस्तेमाल उस गुण के रूप में जो मसीही लोगों में होना आवश्यक है (2 कुरिन्थियों 6:6; गलातियों 5:22; इफिसियों 4:2; 2 तीमुथियुस 4:2) के साथ-साथ मनुष्यजाति के साथ-साथ

ईश्वरीय व्यवहार के लिए किया है (रोमियों 2:4; 9:22; 1 तीमुथियुस 1:16; 1 पतरस 3:20; 2 पतरस 3:15)। याकूब ने धीरज के नमूनों के रूप में किसानों, नबियों और अय्यूब का नाम लिया (याकूब 5:7, 10, 11)। परन्तु यीशु सबसे बड़ा उदाहरण है: "वह गाली सुनकर गाली नहीं देता था, और दुख उठाकर किसी को भी धमकी नहीं देता था, पर अपने आपको सच्चे न्यायी के हाथ में सौंपता था" (1 पतरस 2:23)। उसने "अपने विरोध में पापियों का इतना वाद-विवाद सह लिया, कि तुम निराश होकर हियाव न छोड़ दो" (इब्रानियों 12:3)।

विपत्ति और परीक्षाएं मसीही लोगों को अपने चरित्र को बनाने में सहायक हो सकती हैं (रोमियों 5:3, 4; याकूब 1:2-4)। ऐसा केवल उन्हीं में होता है जो कष्टों को धीरज से सह लेते और जीवन की परेशान करने वाली परिस्थितियों में बने रहते हैं (1 कुरिन्थियों 4:12; 1 पतरस 2:20)। "वर्तमान में हर प्रकार की ताड़ना में आनन्द की नहीं, पर शोक ही की बात दिखाई पड़ती है, तौभी जो उसको सहते-सहते पक्के हो गए हैं, पीछे उन्हें चैन के साथ धर्म का प्रतिफल मिलता है" (इब्रानियों 12:11)।

"यदि किसी को किसी पर दोष देने का कोई कारण हो, तो एक-दूसरे की सह लो, और एक-दूसरे के अपराध क्षमा करो: जैसे प्रभु ने तुम्हारे अपराध क्षमा किए, वैसे ही तुम भी करो" (3:13)

कुलुस्सियों से सहनशीलता और क्षमा के गुणों में बढ़ते रहने की उम्मीद की गई थी। **सह लो** (*anechomai*) का अर्थ सहनशील होना अर्थात दूसरों से उत्तेजना के साथ-साथ कठिन और चिड़ाने वाली परिस्थितियों को सहने के लिए तैयार होना है। इफिसियों 4:2 में पौलुस ने कहा कि एक-दूसरे की सहने के गुण में प्रेम को मिला दिया जाए। यीशु उन लोगों को सह रहा था जिनके कामों से उसके धीरज को परखा गया हो सकता है (मत्ती 17:17; मरकुस 9:19; लूका 9:41)। उसके चेलों को क्लेश या सताव सहने पड़ सकते थे (1 कुरिन्थियों 4:12; 2 थिस्सलुनीकियों 1:4; 2 तीमुथियुस 3:12)। इसके अलावा हमें भी विश्वास की खातिर दूसरों के अपमानों और दुर्व्यवहार को सहने के लिए तैयार होना चाहिए।[32] सकारात्मक अर्थ में कहें तो "सहना" का अर्थ प्रेम से निर्दयता को सह लेना और बदला लेने के बजाय आशीष लेना है (लूका 6:28; रोमियों 12:14; 1 पतरस 2:21-23)। नकारात्मक अर्थ में कहें तो इसका अर्थ बुराई किए जाने या निर्दयता से व्यवहार किए जाने पर परेशान और क्रोधित न होना है। कुलुस्सियों को दूसरों के साथ दुर्व्यवहार करने की अशोभनीय प्रतिक्रिया न करने को सीखना आवश्यक था।

साथी मसीही लोगों के प्रति सहनशीलता दिखाई जानी आवश्यक है। लोग आम तौर पर वही करते हैं जिससे दूसरे लोग चिड़ते हों या उन्हें बुरा लगता हो। मसीही लोगों के लिए भाइयों के प्रति सहनशील व्यवहार को बनाना आवश्यक है। उस निकटता को दिखाने के लिए जो विश्वासियों के समुदाय में होनी चाहिए, पौलुस ने **एक-दूसरे** और **एक-दूसरे** का इस्तेमाल किया। मसीह में भाई और बहनें होने के कारण हमें सावधान रहना चाहिए कि हम परिवार के ऐसे लोगों की तरह काम न करें जो एक-दूसरे से इस बात को छोड़कर चिड़ते हों, जिससे वे उनसे चिड़ते हों जो परिवार के लोग नहीं हैं।

क्षमा करो के लिए शब्द (*charizomai; charis* का सजातीय) का अर्थ "देना" या

''रखना'' (देखें लूका 7:21; रोमियों 8:32; 1 कुरिन्थियों 2:12; गलातियों 3:18; फिलिप्पियों 1:19; 2:9; फिलेमोन 22)। पर या किसी दूसरे की ''देखरेख या सम्भाल में देना'' (प्रेरितों 3:14; 25:11, 16)। इसका इस्तेमाल जैसा कि यहां हुआ है, कर्ज या अपराध की क्षमा के लिए भी हो सकता है (लूका 7:42, 43; 2 कुरिन्थियों 2:7, 10; इफिसियों 4:32)। यह ''क्षमा'' के लिए अधिकतर इस्तेमाल होने वाला शब्द *aphesis* नहीं है; परन्तु यह क्षमा के पूर्ण अर्थ का सुझाव देता है जिसका अनुवाद लूका 7:42 में ''क्षमा कर दिया'' के रूप में हुआ है। पौलुस ने यह संकेत देते हुए कि कुलुस्सियों को एक-दूसरे को क्षमा करते रहना आवश्यक था शब्द के एक रूप का इस्तेमाल किया।

क्षमा पर अपनी शिक्षा में यीशु अधिकतर *aphesis* (''क्षमा'') और *aphiēmi* (''क्षमा करना'') शब्दों का इस्तेमाल करता था। उसने बताया कि दूसरों को हमारी क्षमा असल में अन्तहीन होनी चाहिए: ''सात बार के सत्तर गुणे तक'' (मत्ती 18:22)। उसने इस अवधारणा को एक दृष्टांत देकर समझाया, जिसके स्वामी ने उसके दास का बहुत बड़ा कर्ज़ माफ़ कर दिया था परन्तु उसने अपने साथी दास का थोड़ा सा कर्ज माफ़ नहीं किया। स्वामी ने क्षमा न करने वाले दास को दण्ड दिया (मत्ती 18:23-34)। यीशु ने निष्कर्ष निकाला, ''इसी प्रकार यदि तुम में से हर एक अपने भाई को मन से क्षमा न करे, तो मेरा पिता जो स्वर्ग में है, तुमसे भी वैसा ही करेगा'' (मत्ती 18:35)। परमेश्वर उन्हें क्षमा नहीं करेगा जो दूसरों को क्षमा करने से इनकार करते हैं (मत्ती 6:14)।

हमें उन चोटों को जो हमें मिलती हैं, जैसे उपेक्षा, अपमान, तिरस्कार, घाव, क्षमा करना आवश्यक है। किसी बुराई की स्वाभाविक प्रतिक्रिया क्षमा न करने वाले और ढाह रखने वाले मन का बदला लेना हो सकता है। जो हमें चोट पहुंचाते हैं, उन्हें चोट पहुंचाने के स्थान पर हमें जो हमारा बुरा करते हैं उनका भला चाहना आवश्यक है (लूका 6:35; रोमियों 12:20, 21)।

यूनानी भाषा में संज्ञा के रूप में **अपराध** (*momphē*) नये नियम में केवल एक बार मिलता है। इस शब्द के क्रिया रूप *memphomai* ''दोष'' लगाना या ''कमी ढूंढ़ना'' है (मरकुस 7:2; रोमियों 9:19; इब्रानियों 8:8)। पौलुस ने यह सुझाव नहीं दिया कि अपराध केवल एक ही है। किसी बात पर ठेस लगने पर हम सही हो या न पर हमें उसको जिसने हमें ठेस पहुंचाई है, क्षमा करना आवश्यक है। अपराध क्षमा किए जाने पर इसे भुला दिया जाना चाहिए। प्रभु ने हमें इसी प्रकार क्षमा किया है। इस आयत में ''प्रभु'' यीशु के लिए आयत हुआ है।

क्षमा किए (*charizomai*) वही शब्द है जिसका इस्तेमाल इस आयत में पहले ''क्षमा'' के लिए हुआ है; परन्तु यह रूप अनिश्चितभूतकाल क्रिया है, जिसका अर्थ यह है कि प्रभु ने उनके पिछले पापों को क्षमा करने का काम *पूरा कर लिया* था। क्षमा मसीही लोगों के लिए एक आवश्यक गुण है।[33] यदि परमेश्वर ने हमें तब क्षमा किया जब हम उसकी इच्छा का घोर उल्लंघन करते रहते थे, तो हमें भी एक-दूसरे को क्षमा करना चाहिए। बिना पाप के क्षमा करने वाले व्यक्ति को भी क्षमा न करने का अधिकार होना था। यीशु ने हमें क्षमा करने का नमूना और लक्ष्य दे दिया है (देखें इफिसियों 4:32)।

वैसे ही और तुम भी करो (*kathōs kai*[34] और *houtōs kai*[35]) पौलुस के लेखों में आम मिलते हैं। इस शब्दावली का इस्तेमाल कुलुस्सियों द्वारा नकल किए जाने के लिए मॉडल के

रूप में यीशु पर ज़ोर देने के लिए किया गया। उन्हें यीशु के जैसे बनना था। यूनानी भाषा में मूल में कहा गया है, ''और जैसे प्रभु ने तुम्हें क्षमा किया, तुम भी करो।'' वाक्य का पूर्ण होना समझ में आता है: ''... तुम्हें भी *क्षमा करना चाहिए।*'' जिन लोगों ने परमेश्वर की क्षमा को अनुभव किया है उन्हें दूसरों को क्षमा करने को तैयार रहना चाहिए।

''इन सब के ऊपर प्रेम को जो सिद्धता का कटिबन्ध है बान्ध लो'' (3:14)

मसीही लोगों के लिए बढ़ाने वाला श्रेष्ठ गुण ''प्रेम'' (*agapē*) क्यों यह अन्य सभी गुणों से बढ़कर है (1 कुरिन्थियों 13:13; 1 पतरस 4:8)। प्रेम को मसीही गुणों के शीर्ष में रखा गया है। एक यूनानी दृष्टिकोण से यह स्पष्ट है, क्योंकि गुणों की पौलुस की सूची में ''प्रेम'' का उल्लेख पहले है (गलातियों 5:22)। 2 पतरस 1:5-7 में इसका उल्लेख अंत में है, शायद इसलिए कि बड़े महत्व की किसी बात पर ज़ोर देने का यह यहूदी ढंग है। प्रेम दूसरों को बनाता है (1 कुरिन्थियों 8:1) और अन्य सभी गुणों को बढ़ने की प्रेरणा देता है (रोमियों 13:8-10; गलातियों 5:14)।

प्रेम इस आधार पर नहीं होना चाहिए कि दूसरा व्यक्ति प्रेम के योग्य है या नहीं। या प्रेम करना आसान है या नहीं। मसीही लोगों के लिए उनसे जो प्रिय हों और उन से भी जो अप्रिय हों, प्रेम करना आवश्यक है। परमेश्वर इसी प्रकार से प्रेम करता है (1 यूहन्ना 4:9, 10)। वह इस पापी संसार से जो उसके प्रेम के अयोग्य है, इतना प्रेम करता है कि उसने इसके उद्धार के लिए अपने पुत्र को दे दिया (यूहन्ना 3:16)। परमेश्वर इसी लिए प्रेम करता है क्योंकि वह प्रेम है न कि इसलिए कि लोग प्रिय हैं।

आयत 14 कहती है, **इन सब के ऊपर प्रेम को बांध लो।** NASB में चाहे यह संकेत दिया गया है कि हम ''प्रेम को पहन'' लें, परन्तु पौलुस ने इस वाक्यांश में क्रिया का शब्द नहीं दिया। इसका मूल अनुवाद इस प्रकार से होगा, ''और उन सब के ऊपर प्रेम।'' ''पहनना'' उसमें समझ आता है। यहां यूनानी शब्द *epi* का अनुवाद ''ऊपर'' का अर्थ केवल जैसा 3:2, 6 में है का अर्थ केवल ''पर'' या ''ऊपर'' हो (NIV)। एक और स्वाभाविक अर्थ में ''के अलावा'' है। प्राथमिकता दिए जाने वाले अर्थ में प्रेम के दर्जों का विचार हो सकता है: ''इन सब से,'' ''शेष सब से ऊपर,'' या जैसा यहां अनुवाद किया गया है, ''इन सब के ऊपर।'' यदि वाक्यांश को ''इन के अलावा [या, इन सब पर] प्रेम को बढ़ाओ'' के रूप में समझा जाए तो अर्थ में बहुत अधिक अन्तर नहीं है।

फिर पौलुस ने **कटिबंध** की बात की, जिसे उसने प्रेम की अवधारणा के साथ नज़दीकी से जोड़ दिया। **सिद्धता** के लिए यूनानी शब्द *teleiotēs* और कहीं केवल इब्रानियों 6:1 में मिलता है, जहां इसका अनुवाद ''सिद्धता'' हुआ है। विशेषण रूप *teleios* में बेदाग सिद्धता से बढ़कर सम्पूर्णता का अर्थ है (देखें 1:28)। **बांध** *sundesmos* उसके लिए इस्तेमाल होता है जो चीज़ों को इकट्ठे जोड़े रखता है। इस शब्द का अनुवाद प्रेरितों 8:23 में ''बंधन'' और, और जगह पर ''बंधन'' और ''जोड़ों'' हुआ है (इफिसियों 4:3; कुलुस्सियों 2:19)।

''सिद्ध बंधन'' के रूप में प्रेम के सम्बन्ध में तीन मुख्य व्याख्याएं समझाई गई हैं: प्रेम वह बंधन है जो मसीही लोगों को इकट्ठे बांधे रखता है, मसीही गुणों को जोड़े रखता है, या मसीही

व्यक्ति के जीवन में सिद्धता लाता है। तीनों में से कोई भी विचार मसीही लोगों के जीवनों में प्रेम के प्रभाव से अन्याय नहीं करेगा। आइए हम इन व्याख्याओं को और ध्यान से देखते हैं:

पहले तो प्रेम वह गूंद है जो पूर्ण रूप में पर्याप्त है और इसमें वह सब कुछ है, जो एकता में यीशु के मानने वालों को बंधने के लिए आवश्यक है। यह चिपकाने वाली सबसे बढ़िया चीज़ है। प्रेम की बांधने वाली शक्ति के द्वारा हमें सिद्ध, एक करने वाली एकता में एक-दूसरे के पास लाया और जोड़ा जाता है। एक उदाहरण योनातान के मन का दाऊद के मन से जोड़ना या बंधना था (1 शमूएल 18:1)।

दूसरा, प्रेम गुण का वह तार है जिसे सिद्ध एकता में बांधे रखने के लिए अन्य सभी गुणों के गट्ठे के इर्द-गिर्द लपेटा जाता है। यह पूरी तरह से उन्हें जैविक रूप दे देता है। यह विचार कि प्रेम का प्रभाव यह है एक सम्भावना है परन्तु संदेहपूर्ण व्याख्या है।

तीसरा, प्रेम वह गुण है, जिससे आत्मिक परिपक्वता या सिद्धता आती है। यदि यह अर्थ है तो यह गुण वही है जो मसीही लोगों में अन्य गुण पैदा करता है (1 कुरिन्थियों 13:4-7)। कुछ लोगों ने इस व्याख्या को सह सुझाव देने के लिए पहली व्याख्या से जोड़ा है, क्योंकि प्रेम मसीही लोगों को एकता के सूत्र में बांधता है, इसलिए यह सम्पूर्ण सम्बन्धों का कारण बनता है। विश्वासियों के बीच सम्बन्धों में सिद्धता एक-दूसरे के लिए प्रेम के कारण ही आती है। प्रेम वह बंधन है, जो मसीही लोगों को मसीह में बढ़ने, शांतिपूर्ण एकता के प्रौढ़ स्तर तक लाने में सहायक हो सकता है।

संक्षेप में 3:12-14 में गुणों की पौलुस की सूची में ये हैं:

1. ''करुणा'' व्यक्ति को दूसरों के कष्टों को यहां तक अहसास कराती है कि वह आवश्यकता या कष्ट के समय उनकी सहायता करने का इच्छुक होगा।
2. ''भलाई'' मसीही व्यक्ति को बिना कठोरता या रूखेपन की कोमलता से दूसरों की बात मानने के लिए प्रेरित करती है।
3. ''दीनता'' व्यक्ति को हर वर्ग के लोगों के साथ स्वेच्छा से मिलकर रहने का कारण बनती है और अपने आपको दूसरों से ऊंचा न करने या दूसरों से श्रेष्ठ न समझने का कारण बनती है।
4. ''नम्रता'' सम्बन्धों में वह तकिया देता है, जो व्यक्तित्व के कठोर किनारों को मुलायम कर देता है। यह दूसरों के हृदयों को आकर्षित करने वाला मुलायम स्पर्श है।
5. ''सहनशीलता'' वह गुण है जो जीवन के तनावों को दूर तक देखता है और यह समझ लेता है कि यह थोड़े समय के लिए होंगे और समय के बीतने से उनका महत्व खत्म हो जाएगा।
6. ''एक-दूसरे की सह'' लेना वह गुण है जो व्यक्ति को उसके साथ बुरा होने पर अपमानों को नज़रअन्दाज़ करने, दुश्वारियों को सहने और बदला लेने से इनकार करने का कारण बनता है।
7. ''क्षमा करने'' वाला होना परमेश्वर के अपने स्वभाव का गुण है जो मन मुटाव नहीं रखेगा बल्कि जो बुराई की गई है उसे भूल जाएगा।

8. ''प्रेम'' दूसरों के लिए चिंता और करुणा को मिलाते हुए सभी गुणों को इकट्ठे बांध देता है। यह अपने लगाव वालों के लिए अपना बलिदान देने को तैयार रहता है।

और अध्ययन के लिए

''प्रेम'' (3:14)

''प्रेम'' की परिभाषा ''किसी दूसरे की प्रतिष्ठा, लगाव, सम्बन्ध, में गहरा सम्मान और दिलचस्पी, प्रेम (बहुत गहरे सम्बन्धों तक सीमित हुए बिना और सामान्य सेक्स के आकर्षण के सामान्य यूनानी शब्द में बहुत कम) के गुण'' के रूप में की जाती है।[36] यह क्रिया शब्द 3:12, 19 में मिलता है; और शब्द का संज्ञा रूप 1:4, 8, 13; 2:2; 3:14 में मिलता है।

नये नियम में *agapē* (क्रिया रूप *agapaō* और *phileō*) दोनों यूनानी शब्दों के अलग अलग रूपों का अनुवाद ''प्रेम'' किया गया है। संज्ञा रूप *philē* नये नियम में नहीं मिलता। *phileō* का मूल अर्थ किसी दूसरे व्यक्ति के प्रति आनन्दित होने और मित्रता की भावना रखने के लिए भावना से प्रभावित झुकाव है। पौलुस के समय तक *agapaō* प्रेम को व्यक्त करने और *phileō* अर्थ को शामिल करने में दोनों शब्दों के उपयोग में काफ़ी बातें मिलती थीं। ''प्रेम'' के लिए एक और यूनानी शब्द *eros* ''कामुक प्रेम को दर्शाता'' नियम में नहीं मिलता है।

Phileō. पौलुस ने क्रिया शब्द *phileō* का इस्तेमाल 1 कुरिन्थियों 16:22 और तीतुस 3:15 में किया। सबसे अधिक यह यूहन्ना में ग्यारह बार मिलता है। *Phileō* की परिभाषा मित्रता, अनुराग और दूसरों के प्रति भाईचारे के व्यवहार के रूप में की जाती है। यूनानी संज्ञा शब्द *philos* का अनुवाद आम तौर पर मिश्रित शब्दों ''भाईचारे के प्रेम'' *philadelphia* (रोमियों 12:10); ''रुपये का लोभ,'' *philarguria* (1 तीमुथियुस 6:10); ''मनुष्य स्वार्थी'' *philarguros* (2 तीमुथियुस 3:2); ''लोभी,'' *philautos* (2 तीमुथियुस 3:2); ''सुख विलास के चाहने वाले,'' *philēdonos* (2 तीमुथियुस 3:4); ''परमेश्वर के चाहने वाले,'' *philotheos* (2 तीमुथियुस 3:4); ''भलाई का चाहने वाला'' *philagathos* (तीतुस 1:8); ''पतियों से प्रीति'' *philandros* (तीतुस 2:4); ''बच्चों से प्रीति'' *philoteknos* (तीतुस 2:4); और ''मनुष्यों पर [परमेश्वर] का प्रेम,'' *philanthropos* (तीतुस 3:4) हुआ है।

Phileō में स्वाभाविक लगाव है परन्तु यह सीखा गया प्रेम भी हो सकता है। बूढ़ी स्त्रियों को, जवान स्त्रियों से अपने पतियों और अपने बच्चों से प्रेम रखने की शिक्षा देना आवश्यक है (तीतुस 2:4)। (यूनानी भाषा के शब्द *philandros* का अर्थ ''पति-प्रेमी'' होना है।) स्पष्टतया *phileō* को ''पकड़ा'' के साथ-साथ सिखाया भी हो सकता है।

Agapaō. ऐसे प्रेम में *phileō* प्रेम हो सकता है।[37] परन्तु *agapaō* सम्बन्ध में *phileō* से बढ़कर गहरा इस्तेमाल है। दोनों का इस्तेमाल किसी चीज़ को प्राथमिकता देने के लिए हो सकता है। जैसे प्रमुख जगहों के लिए प्रेम (मत्ती 23:6 में *phileō*; लूका 11:43 में *agapaō*) या किसी व्यक्ति के लिए, जैसे जो प्रेम यीशु को ''जिससे वह प्रेम रखता था'' किया (यूहन्ना 19:26; 21:7, 20 में *agapaō*; यूहन्ना 20:2 में *phileō*)। परमेश्वर जिनसे प्रेम करता है (इब्रानियों 12:6 में *agapaō*; प्रकाशितवाक्य 3:19 में *phileō*), उन्हें अनुशासित करता और

डांटता है। कई मामलों में *agapaō* की आज्ञा दी गई है। इसलिए हो सकता है कि इसका अर्थ हर बार स्वाभाविक लगाव न हो। परन्तु यीशु ने एक जवान को देखा, और उससे ''प्रेम किया'' (मरकुस 10:21) जो प्रेम की स्वाभाविक किस्म के लिए लागू होता प्रतीत होता है।

कुछ लोगों ने मुख्यता के कारण कि यीशु ने सिखाया कि उसके चेले अपने शत्रुओं से प्रेम रखें, निष्कर्ष निकाला कि *agapaō* में कोई भावनात्मक लगाव नहीं है। प्रेम के दर्जे हैं (मत्ती 10:37; लूका 7:42, 47; यूहन्ना 15:13), इस कारण हम निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि हमें लगाव की उसी गहराई से जिससे हम साथी मसीही लोगों से प्रेम रखते हैं, अपने शत्रुओं से प्रेम रखना आवश्यक नहीं है। कुछ अर्थ में यीशु ने एक चेले को दूसरों से अधिक प्रेम किया होगा। यूहन्ना 19:26 और 21:7, 20 में बड़े लगाव का संकेत मिलता है।

मसीही लोगों में प्रेम के अलग-अलग स्तर का होना आवश्यक है। प्रेम का उच्चतम स्तर परमेश्वर के लिए प्रेम होना है। उससे अपने सारे मन, अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि और अपनी सारी सामर्थ के साथ प्रेम करना आवश्यक है (मत्ती 22:37; मरकुस 12:30)। दूसरा स्तर परिवार, और साथी लोगों के लिए प्रेम है, जो अपने चेलों के लिए यीशु का था (यूहन्ना 13:34)। तीसरा स्तर पड़ोसी से हमारे प्रेम का है। जिन से हमें अपने समान प्रेम रखना आवश्यक है (मत्ती 22:39)। अन्तिम स्तर अपने शत्रु के लिए प्रेम का होना है (मत्ती 5:44; लूका 6:35)। हमें अपने शत्रुओं से उसी प्रकार प्रेम रखना आवश्यक नहीं है, जैसे हम परमेश्वर से, साथी मसीही लोगों से या अपने पड़ोसियों से रखते हैं।

agapaō और *phileō* के अर्थ चाहे जितने भी हों, परन्तु मसीही लोगों को एक-दूसरे के लिए निष्कपट प्रेम रखना आवश्यक है: ''पर जिस किसी के पास संसार की संपत्ति हो और वह अपने भाई को कंगाल देखकर उस पर तरस खाना न चाहे, तो उसमें परमेश्वर का प्रेम क्योंकर बना रह सकता है?'' (1 यूहन्ना 3:17)। अपने साथी मसीही लोगों के लिए मसीही व्यक्ति का प्रेम जितना अधिक होगा उतना ही वह परमेश्वर के जैसा बनेगा। क्योंकि परमेश्वर प्रेम है (1 यूहन्ना 4:8)। अपने चेलों के लिए यीशु का प्रेम वह प्रेम है जिससे यीशु के चेलों को भरकर परमेश्वर की सेवा में प्रेरित होना चाहिए। प्रेम शिष्य होने का दिल से निकला एजेंडा है, जो मसीही लोगों को चिह्न के रूप में पहनना आवश्यक है। प्रेम से सब लोगों को पता चल जाएगा कि हम यीशु के चेले हैं (यूहन्ना 13:35)।

क्षमा (3:13)

क्षमा क्या है? यीशु ने बताया कि हमें क्षमा पाने के लिए दूसरों को क्षमा करना आवश्यक है। क्षमा पर चर्चाओं में चार अलग-अलग यूनानी शब्दों का इस्तेमाल किया जाता है।

(1) *Aphesis* जिसका अर्थ ''छोड़ना'' या ''छुटकारा देना'' जैसे पास से, का इस्तेमाल केवल परमेश्वर की गतिविधि के सम्बन्ध में किया जाता है न कि दूसरों को क्षमा करने के सम्बन्ध में।[38]

(2) *Apolouō* शब्द का अनुवाद ''माफ़ी'' (''क्षमा''; KJV), किया जाने पर इसका इस्तेमाल केवल दूसरों को क्षमा करने के सम्बन्ध में किया गया है: ''क्षमा करो, तो तुम्हें भी क्षमा किया जाएगा'' (लूका 6:37)। अन्य वचनों में इसका अनुवाद ''विदा कर'' (मत्ती 15:23),

''त्यागना'' (मत्ती 19:3) और ''छोड़'' (मत्ती 27:15) हुआ है।

(3) *Aphiēmi* का अर्थ बार-बार ''होने दे'' (मत्ती 3:15) या ''चला गया'' (मत्ती 4:11) हुआ है। पहाड़ी उपदेश में यीशु ने नमूने की प्रार्थना में दूसरों के कर्ज़ क्षमा करने की बात की (मत्ती 6:12; देखें लूका 11:4)। इसके बाद उसने कहा कि हमें दूसरों के (मत्ती 6:14, 15; मरकुस 11:25, 26) अपराधों को क्षमा करना आवश्यक है (*paraptōma* ''अपराध'' भी; रोमियों 4:25; KJV)। पतरस ने उन्हें क्षमा करने के विषय में पूछा जो हमारा अपराध (*hamartia*) करता है (मत्ती 18:21)। हमें अपने विरुद्ध पाप करने वालों को डांटना आवश्यक है। यदि वे मन फिरा लेते हैं तो हमें उन्हें क्षमा कर देना आवश्यक है (लूका 17:3, 4)।

(4) एक और शब्द *charizomai* जिसका अनुवाद ''क्षमा'' हुआ है, का अर्थ ''अनुग्रहपूर्वक क्षमा'' है, इसका हमारी आहत भावनाओं को शांत करने की दूसरों से मांग किए बिना खुले दिल से क्षमा करना है (इफिसियों 4:32; कुलुस्सियों 3:13)।

जो अपराध हमारे विरुद्ध किए गए हों? क्षमा की बात में पौलुस की दिलचस्पी थी क्योंकि उसने यीशु से पूछा, ''हे प्रभु, यदि मेरा भाई अपराध करता रहे, तो मैं कितनी बार उसे क्षमा करूं, क्या सात बार तक? यीशु ने उस से कहा, मैं तुझ से यह नहीं कहता कि सात बार, वरन सात बार से सत्तर गुणा तक'' (मत्ती 18:21, 22)। फिर उसने एक राजा का उदाहरण दिया जिसने दो सेवकों को क्षमा किया था, जो उन्हें उसका अलग-अलग राशि में कर्ज़ा देना था। जिसका अधिक माफ़ हुआ था उसे सताव सहना पड़ा था क्योंकि वह अपने साथी सेवक का कर्ज़ क्षमा करने को तैयार नहीं था। यीशु ने यह कहते हुए बात खत्म की, ''यदि तुम में से हर एक अपने भाई को मन से क्षमा न करे, तो मेरा पिता जो स्वर्ग में है, तुमसे भी वैसा ही करेगा'' (मत्ती 18:35)।

जो लोग हमारा अपराध करते हैं हमें उन तक सच्ची लगन से पहुंचना आवश्यक है। यदि वे मन फिरा लें तो हमें उन्हें क्षमा कर देना आवश्यक है (लूका 17:3, 4)। यीशु ने इसमें यह कहते हुए और जोड़ा कि यदि भाई हमारी नहीं सुनता है तो हमें अपने साथ एक या अधिक गवाहों को ले लेना आवश्यक है। यदि वह उनकी सुनने से इनकार करता है तो मामला कलीसिया के सामने ले जाया जाए। तब यदि वह कलीसिया की नहीं सुनता तो उसके साथ ऐसे व्यवहार किया जाए ''जैसे वह मसीही न हो।''[39] (मत्ती 18:15-17)। कुछ परिस्थितियों में हम अपना अपराध करने वालों को डांट सकते हैं। यहां पर उपयुक्त प्रतिक्रिया उन्हें क्षमा कर देने की होनी आवश्यक है (लूका 23:34; प्रेरितों 7:60)।

हमारे विरुद्ध अपराध कर्जों या सरकारी दायित्वों से अलग है। यीशु ने कहा कि यदि एक दूसरें के प्रति हमारे मन में कुछ है तो प्रार्थना करते समय हमें क्षमा कर देना आवश्यक है। यदि हम ऐसे अपराधों को क्षमा नहीं करते तो परमेश्वर भी हमें क्षमा नहीं करेगा (मरकुस 11:25, 26)। इन अपराधों के दूसरे अप्रिय कार्य या बातें हो सकती हैं जो व्यक्तिगत रूप में हमें चिड़ाती हैं, जैसे उपेक्षाएं, अपमान और ठुकराया जाना और घाव शामिल हैं। जैसे यदि हम किसी के साथ लम्बे समय से हैं तो वह कुछ ऐसा करेगा जो हमें न पसन्द हो। हमें उसके प्रति रंजिश न रखते हुए उसे क्षमा कर देना आवश्यक है।

''परमेश्वर का प्रकोप'' (3:6)

परमेश्वर का संतुलित विचार पाने के सम्पूर्ण स्वभाव को समझना आवश्यक है। वह अनुग्रह और न्याय का (रोमियों 3:24, 26), प्रकोप और दया का (रोमियों 2:5; 12:1), प्रेम और घृणा का (इब्रानियों 1:9) परमेश्वर है। उसे इन में से किसी भी गुण में सीमित नहीं किया जा सकता है क्योंकि वह दयालु भी है और कठोर भी (रोमियों 11:22)। मनुष्यजाति उसकी भावनाओं को समझ सकती है, क्योंकि उसने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार बनाया है (उत्पत्ति 1:26, 27) जिस कारण लोगों में उस के थोड़े बहुत गुण रहते ही हैं। फर्क यही है कि परमेश्वर उन्हें वश में करके उनका इस्तेमाल सच्चाई से करता है जबकि मनुष्यजाति उसे बिगाड़ कर उसका दुरुपयोग करती है।

परमेश्वर का प्रकोप पापी लोगों के ऊपर पड़ेगा (मत्ती 3:7)। अच्छी ख़बर यह है कि यीशु ने पापों की क्षमा के लिए अपना लहू बहा दिया (मत्ती 3:7; 26:28; 2 कुरिन्थियों 5:21) और ऐसा करके उसने विश्वासियों के लिए परमेश्वर के प्रकोप से बचना सम्भव बना दिया है (1 थिस्सलुनीकियों 1:10; 5:9)। यीशु उन्हें अनन्त प्रतिफल देगा, जो उसकी आज्ञा मानते हैं (इब्रानियों 5:9) परन्तु उन्हें बदला देगा जो सुसमाचार की बात अपने तक नहीं मानते हैं (2 थिस्सलुनीकियों 1:7-9)। परमेश्वर ऐसा कठोर दण्ड देगा, क्योंकि उसे ''उन से फिर प्रीति'' (होशे 9:15) नहीं हो सकती, जो ढिठाई से अपने पाप में बने रहते हैं (भजन संहिता 5:5; 11:5)।

परमेश्वर सच्चाई से उन लोगों के ऊपर प्रकोप ला सकता है, जो उसके नियमों का आदर नहीं करते हैं। ''क्योंकि व्यवस्था तो क्रोध उपजाती है और जहां व्यवस्था नहीं वहां उसका टालना भी नहीं'' (रोमियों 4:15)। यदि किसी ने परमेश्वर के नियमों को तोड़ा ही न होता तो प्रकोप करने का कोई उचित कारण नहीं होना था और अनुग्रह की कोई आवश्यकता नहीं होनी थी क्योंकि अनुग्रह तो पाप क्षमा करने और धर्मी ठहराने के लिए है। सब ने पाप किया है (रोमियों 3:23); सब ने परमेश्वर के नियमों को तोड़ा है और उन्हें धर्मी ठहराए जाने की आवश्यकता है (रोमियों 3:24)।

कुछ लोगों का निष्कर्ष है कि व्यवस्था किसी को धर्मी नहीं ठहरा सकती, इसलिए मसीही लोग किसी प्रकार की व्यवस्था के अधीन नहीं आते (रोमियों 3:20; गलातियों 2:16, 21; 5:4)। व्यवस्था प्रकोप और श्राप लेकर आती है (रोमियों 4:15; गलातियों 3:10)। इस दृष्टिकोण से व्यवस्था किसी को धर्मी नहीं ठहराती है। दूसरी ओर यीशु ने आज्ञाएं दी हैं, जिन्हें मानना आवश्यक है।[40] ये आज्ञाएं मिलकर मसीह और परमेश्वर की व्यवस्था (1 कुरिन्थियों 7:19; 9:21; गलातियों 6:2), स्वतंत्रता की सिद्ध व्यवस्था (याकूब 1:25; 2:12) बनती हैं। जहां आज्ञाएं हैं, वहां व्यवस्था है क्योंकि व्यवस्था आज्ञाओं को मिलाकर ही बनती है। यीशु ने अनन्त जीवन पाने के इच्छुक सभी लोगों को अपनी आज्ञाएं मानने के लिए दी हैं (यूहन्ना 12:49, 50)।

परमेश्वर का प्रकोप एक वास्तविकता है। उसका क्रोध उन लोगों के ऊपर उण्डेला जाएगा जो उसके नियमों और मसीह के नियमों को न मानना चुनते हैं। परमेश्वर को समझने का अर्थ उसके न्याय के साथ-साथ उसके प्रेम और उसकी दया को जानना है।

प्रासंगिकता

विशेष पाप, जिनसे बचना आवश्यक है (3:5-7)

आयत 5 में मसीही बनने के बाद दी गई सूची में कौन से पाप हैं जिनसे हमें ''मृत'' रहना आवश्यक है ?

1. अनैतिकता या व्यभिचार-हर प्रकार के अनैतिक शारीरिक कार्य।
2. अशुद्धता-कोई भी अशुद्ध विचार जो मसीही लोग अपने मन में रख सकते हैं (मत्ती 5:27, 28; रोमियों 1:32)।
3. दुष्कामना-मसीही लोगों को शरीर की कामनाओं को वश में रखना सीखना आवश्यक है।
4. बुरी लालसा-अनैतिक गतिविधि की हर तीव्र इच्छा।
5. लोभ-वस्तुओं के प्रति अस्वस्थ व्यवहार, यहां तक कि उन्हें पाने के लिए उनकी पूजा करने, मूर्तियां बनवा लेना या समर्पित प्रयास करना।

ईश्वरीय प्रकोप उन लोगों के ऊपर पड़ेगा, जो अपने आपको अनैतिक व्यवहारों के लिए दे देते हैं। परमेश्वर धार्मिकता से प्रेम करता और अधर्म से बैर करता है (इब्रानियों 1:9)। परमेश्वर उनके विरुद्ध है जो जानबूझकर उसकी इच्छा को ठुकराते और अपने आपको बुरे व्यवहारों में देते हैं।

अपने पुराने जीवनों में कुलुस्से के लोगों ने अपने आपको इन पापों के लिए दिया हुआ था और वे परमेश्वर के प्रकोप के अधीन थे (आयत 7)। इन व्यवहारों से मर जाने पर उनके प्रति परमेश्वर का विचार बदल गया। इन कामों में लगे रहने वालों के लिए परमेश्वर के मन में बदलाव से क्षमा का क्या आश्वासन मिलता है ? 1 पतरस 2:10 कहता है, ''पहिले ... तुम पर दया नहीं हुई थी पर अब तुम पर दया हुई है।''

यीशु के जैसे बनना (3:8-11)

क्रोध करने, गालियां बकने और झूठ बोलने पर हम यीशु का अनुसरण कैसे कर सकते हैं ? मसीही लोगों को इन चीज़ों को उतार देने का निर्देश दिया गया है:

1. क्रोध-स्वभाव का भड़कना।
2. प्रकोप-अत्यधिक रोष।
3. वैरभाव-चिड़चिड़ा होना।
4. निंदा-किसी व्यक्ति या वस्तु को बदनाम करने का प्रयास।
5. मुंह से गालियां-कठोर भाषा।
6. झूठ बोलना-सच्चाई को बिगाड़ना।

इन पापपूर्ण कार्यों से दूर रहना मसीही स्वभाव की गारंटी नहीं है; मसीह जैसे गुणों को पहनना भी आवश्यक है (आयत 10)। मसीही लोग यीशु को जानकर भी उसके गुणों को अपना सकते हैं। पौलुस का लक्ष्य यीशु को जानना था ताकि वह उसके द्वारा ठहराए गए उच्च मापदण्ड पर पहुंच सके (फिलिप्पियों 3:10-14)। हमारी आंखें यीशु पर लगी रहनी चाहिए (इब्रानियों 12:2)।

ग्रेट स्टोन बेस की कहानी में एक लड़का बचपन से एक महान व्यक्ति के बारे में सुनता आ रहा था, जिसने उसके गांव में आना था। इस व्यक्ति का चेहरा पहाड़ में लगी चट्टान जैसा दिखाई देना था। लड़का वर्षों तक उस व्यक्ति के विषय में सुन-सुनकर उसके चरित्र को निहारता रहता था और उसे उम्मीद थी कि एक दिन वह उस व्यक्ति से मिल पाएगा। उसे इसका अहसास नहीं हुआ परन्तु बड़ा होते हुए उस व्यक्ति के स्वभाव पर ध्यान देते हुए लड़का उस महान व्यक्ति जैसा बन गया, जिसका वर्णन गांव के लोग किया करते थे। एक दिन यह लड़का जो कि अब बूढ़ा हो गया था, जब पहाड़ में स्टोनफेथ यानी पत्थर की आकृति की ओर देख रहा था तो गांव वालों ने पहचान लिया कि वह उस ग्रेट स्टोनफेथ के जैसा दिखाई देता है।[41] वह उस व्यक्ति जैसा बन गया था, क्योंकि वह उसे सराहता और उसके विवरण की नकल करता था। यीशु को देखकर, उसे सराहकर और उस पर ध्यान लगाकर, हम उनके जैसे बन सकते हैं (2 कुरिन्थियों 3:18)।

मसीही लोगों के आत्मिक गुण (3:12-14)

नये व्यक्ति के गुणों को पहन लेने से पुरानी अवांछित आदतों को दूर करने में सहायता मिलेगी। गिलास को पानी से भरने पर उसमें से हवा को निकलना पड़ेगा; इसी प्रकार से सकारात्मक मसीही विशेषताओं के बढ़ने से हमारे जीवनों में से नकारात्मक व्यवहारों को बाहर करने में सहायता मिलेगी।

पौलुस ने हमें नये स्वभाव को पहनने के लिए तीन कारण बताए: हम परमेश्वर के चुने हुए, पवित्र और प्रिय हैं (आयत 12)। हमें परमेश्वर द्वारा उनके होने के लिए चुनने में दिखाए गए भरोसे को दिखाना चाहिए। हमें यह समझना आवश्यक है कि हम दुष्ट संसार से अलग किए हुए हैं और उसके प्रिय लोग हैं। किसी विशेष कार्य के लिए चुना गया बच्चा अपने काम पर गर्व कर सकता है क्योंकि उसे मालूम है कि उसे एक ज़िम्मेदारी दी गई है, जिसे दूसरे लोग इतनी अच्छी तरह से पूरा नहीं कर सकते थे जितनी अच्छी तरह से वह पूरा कर सकता है। इसी प्रकार से मसीही लोगों को यह पता होना चाहिए कि यीशु ने हमें अपने अलग और प्रिय लोग होने के लिए चुना है।

मसीही लोगों को आत्मिक गुण बढ़ाने आवश्यक हैं (आयत 12-14)।

1. जब व्यक्ति इन गुणों को बढ़ा देता है तो वह कैसा हो जाता है? वह कैसे काम करता है? वह ... करुणामय है-जो दूसरों की आवश्यकताओं की परवाह करता है।
2. भला-जो दूसरों की भलाई की तलाश में दिलचस्पी लेता है।
3. दीन है-अपने आपको दूसरों के बराबर रखता है, जिससे वह उनसे अलग न हो।
4. नम्र है-दूसरों के साथ व्यवहार करते समय कठोरता और निर्दयता को दूर करते हुए दूसरों के प्रति कोमलता रखता है।

5. सहनशील है–तनाव और दबाव में सहने की इच्छा रखता है।
6. एक–दूसरे की सह लेता है–अपमानों की अनदेखी करते हुए, बाधाओं को सहते हुए, बुराई होने पर बदला लेने से इनकार करता है।
7. क्षमा करता है–किसी अपराधी के विरुद्ध कोई रंजिश नहीं रखता। क्षमा का आधार यीशु से मिली क्षमा है।
8. प्रेम करता है–दूसरों से लगाव होने के कारण उनका भला चाहता है। अन्य सभी गुण दूसरों से प्रेम करने वाले मसीही लोगों में डाले जाते और बढ़ते हैं। सभी गुणों में सबसे महत्वपूर्ण यह है।

क्या क्षमा करने का अर्थ भूल जाना होता है? (3:13)

अतीत के परेशान करने वाले अनुभव हो सकता है कि कभी न भूले, सच्चे मन से क्षमा दे दिए जाने के बावजूद। पौलुस ने उन्हें याद किया, जिन्होंने कैसर के दरबार में पेशी होने के समय उसे छोड़ दिया था। परन्तु उसने उन्हें क्षमा भी कर दिया था। उसने विनती की, ''भला हो कि इसका उनको लेखा न देना पड़े'' (2 तीमुथियुस 4:16)।

क्या क्षमा इससे तय होती है कि जिसका अपराध हुआ हो उसे याद रहा है या नहीं? नहीं, इसमें यह बात पाई जाती है कि घाव कितना याद है। यदि इसे याद रखा जाता है परन्तु अपराध करने वाले के लिए मन में रंजिश नहीं रखी जाती, तो क्षमा दे दी गई है। परन्तु यदि याद रखा जाता है और अपराध करने वाले के विरुद्ध मन में अभी भी रंजिश है तो क्षमा नहीं हुई है।

जब अपराध करने वाला मन न फिराए (3:13)

यदि कोई मन न फिराए तो क्या तब भी उसे क्षमा कर दिया जाना चाहिए?

यीशु ने अपने चेलों को उन्हें क्षमा करने की आज्ञा दी, जो कहते हैं कि उन्होंने मन फिरा लिया है। ''यदि तेरा भाई अपराध करे तो उसे समझा, और यदि पछताए तो उसे क्षमा कर। यदि दिन भर में वह सात बार तेरा अपराध करे और सातों बार तेरे पास फिर आकर कहे, कि मैं पछताता हूं, तो उसे क्षमा कर'' (लूका 17:3, 4)। पवित्र शास्त्र यह नहीं बताता है कि कौन किसी दूसरे के विरुद्ध हो सकता है परन्तु यीशु ने कहा कि उसके चेलों को उन्हें क्षमा कर देना चाहिए यदि वे मन फिराते हैं।

यह देखने के बाद क्षमा देने के लिए हम से कहा जाने पर हमें क्या करना है। आइए हम पूछते हैं कि ''यदि उसने क्षमा मांगी ही न हो तो क्या हम क्षमा कर दें?'' परमेश्वर की क्षमा मन फिराव की शर्त पर है (2 पतरस 3:9) इसलिए ऐसा लगेगा कि मसीही लोगों को दूसरों को क्षमा करने की तब तक आवश्यकता नहीं है, जब कि वे मन नहीं फिराते। क्या मसीही व्यक्ति के लिए यह बात सही है? क्या मसीही व्यक्ति ऐसे व्यक्ति को क्षमा कर सकता है जिसने उसका अपराध तो किया है परन्तु क्षमा नहीं मांगी है, चाहे वह व्यक्ति जो कुछ उसने किया है उसके पछतावे के चिह्न दिखा देता है? जब कोई व्यक्ति सचमुच में न फिराने पर ऊपर–ऊपर से क्षमा मांगता है? ऐसे व्यक्ति को क्षमा करना क्या गलत है?

इन प्रश्नों का उत्तर लगता है कि मरकुस 11:25 में मिलता है। वहां पर यीशु ने समझाया,

''जब कभी तुम खड़े हुए प्रार्थना करते हो, तो यदि तुम्हारे मन में किसी की ओर से कुछ विरोध हो, तो क्षमा करो: इसलिए कि तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा करे'' (मरकुस 11:25)। यह सम्भवतया किसी ऐसे व्यक्ति को क्षमा करने का उदाहरण है जिसने क्षमा न मांगी हो। यीशु ने उन लोगों की क्षमा के लिए प्रार्थना की, जिन्होंने उससे क्षमा नहीं मांगी, बल्कि उसे क्रूस पर कीलों से जड़ दिया था (लूका 23:34)। स्तिफनुस ने अपने ऊपर पथराव किए जाने के समय क्षमा करने के इसी मन को दिखाया था (प्रेरितों 7:60)।

टिप्पणियां

[1]एडुअर्ड लोहसे, *क्रोलोसियंस एंड फिलेमोन,* अनु. विलियम आर. पोहलमन एंड रॉबर्ट जे. कैरिस, हरमेनया (फिलाडेल्फिया: फोर्टरेस प्रैस, 1971), 137. [2]वही. [3]मत्ती 5:32; 15:19; 19:9; मरकुस 7:21; प्रेरितों 15:20, 29; 21:25; 1 कुरिन्थियों 5:1; 6:13, 18; 7:2; 10:8; 2 कुरिन्थियों 12:21; गलातियों 5:19; इफिसियों 5:3; 1 थिस्सलुनीकियों 4:3; प्रकाशितवाक्य 2:14, 20, 21; 9:21. [4]मत्ती 15:19; मरकुस 7:22; यूहन्ना 8:3. [5]मत्ती 5:27, 28; 19:18; मरकुस 10:19; लूका 16:18; 18:20; यूहन्ना 8:4; रोमियों 2:22; 13:9; याकूब 2:11. [6]मत्ती 13:17; लूका 15:16; 16:21; 17:22; 22:15; 1 तीमुथियुस 3:1; इब्रानियों 6:11; 1 पतरस 1:12. [7]लूका 12:15; रोमियों 1:29; इफिसियों 4:19; 5:3; 1 थिस्सलुनीकियों 2:5; 2 पतरस 2:3, 14. [8]निर्गमन 4:14; गिनती 11:10; व्यवस्थाविवरण 11:17; यहोशू 7:1; न्यायियों 2:12; 2 शमूएल 6:7; 1 राजाओं 15:30; 2 राजाओं 13:3; एज्रा 10:14; अय्यूब 9:13; भजन संहिता 78:31; यशायाह 5:25; यिर्मयाह 4:8; यहेजकेल 5:13; होशे 8:5; मीका 5:15; नहूम 1:6; इफिसियों 2:2; जकर्याह 1:2. [9]गिनती 16:46; व्यवस्थाविवरण 9:8; यहोशू 22:20; 1 शमूएल 28:18; 2 राजाओं 22:13; अय्यूब 42:7; भजन संहिता 21:9; द। 51:20; यिर्मयाह 7:20; यहेजकेल 13:13–15; दानिय्येल 9:16; होशे 13:11; मीका 5:15; इफिसियों 1:18; जकर्याह 7:12. [10]मरकुस 3:5; यूहन्ना 3:36; रोमियों 1:18; 5:9; इफिसियों 5:6; इब्रानियों 3:11; प्रकाशितवाक्य 14:10; 15:1; 16:19; 19:15.

[11]विलियम हैंड्रिक्सन, *एसक्पोज़िशन ऑफ़ क्रोलोसियंस एंड फिलेमोन,* न्यू टैस्टामैंट कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1964), 147. [12]ब्रूस एम. मैज़गर, *ए टैक्सचुअल कमैंट्री ऑन द ग्रीक न्यू टैस्टामैंट,* 2रा संस्क. (न्यू यॉर्क: यूनाइटेड बाइबल सोसायटीज़ , 1971), 625. [13]हरबर्ट एम. कारसन, द *एपिस्टल्स ऑफ़ पॉल टू द क्रोलोसियंस एंड फिलेमोन: एन इंट्रोडक्शन एंड कमैंट्री,* द टिंडेल न्यू टैस्टामैंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1960), 82. [14]यूहन्ना 11:9; 12:35; रोमियों 6:4; 1 कुरिन्थियों 7:17; 2 कुरिन्थियों 5:7; गलातियों 5:16, 25; 6:16; इफिसियों 2:10; 4:1; 5:8, 15; फिलिप्पियों 3:17; कुलुस्सियों 1:10; 1 थिस्सलुनीकियों 2:12; 4:1; 1 यूहन्ना 1:7; 2:6; 2 यूहन्ना 4, 6; 3 यूहन्ना 3, 4. [15]यूहन्ना 8:12; 11:10; 12:35; 1 कुरिन्थियों 3:3; 2 कुरिन्थियों 4:2; 10:3; इफिसियों 2:2; 4:17; फिलिप्पियों 3:18; 1 यूहन्ना 1:6; 2:11. [16]हैंड्रिक्सन, 149. [17]NASB में *orge* का अनुवाद छह बार ''क्रोध'' और तीस बार ''रोष'' किया गया है। [18]मत्ती 3:7; लूका 3:7; 21:23; रोमियों 2:5, 8; 3:5; 5:9; 9:22; 12:19; इफिसियों 2:3; 5:6; कुलुस्सियों 3:6; 1 थिस्सलुनीकियों 1:10; 2:16; 5:9; प्रकाशितवाक्य 6:16, 17; 11:18; 14:10; 16:19; 19:15. [19]रॉबर्ट जी. ब्रेचर एंड यूजीन ए. निडा, *ए ट्रांसलेटर्स हैंडबुक ऑन पॉल'स लैटर टू द क्रोलोसियंस एंड टू फिलेमोन,* हैल्पस फ़ॉर ट्रांसलेटर्स (न्यू यॉर्क: यूनाइटेड बाइबल सोसायटी, 1977), 82. [20]मत्ती 15:19; मरकुस 7:22; कुलुस्सियों 3:8; 1 तीमुथियुस 6:4; 2 तीमुथियुस 3:2.

[21]डेविड एम. हे, *क्रोलोसियंस,* अबिंग्डन न्यू टैस्टामैंट कमैंट्रीज़ (नैशविल्ले: अबिंग्डन प्रैस 2000), 126. [22]रोमियों 13:12–14; गलातियों 3:27; इफिसियों 4:22, 24; 1 थिस्सलुनीकियों 5:8. [23]एडुअर्ड शवेज़र, द *लैटर टू द क्रोलोसियंस: ए कमैंट्री,* अनु. एंड्रयू चेस्टर (ज्युरिच: बेन्ज़ाइगर वरलग, 1976; रिप्रिंट, मिनियापोलिस: आग्सबर्ग पब्लिशिंग हाउस, 1982), 197. [24]प्रेरितों 15:1, 2; 1 कुरिन्थियों 12:12, 13, 20; गलातियों 2:11–14; 3:26–28. [25]जोसेफस *अंगेस्ट अपियन* 2:269; फिलो *ऑन द एम्बेसी टू गयुस* 10 भी देखें। [26]हेरोदोतस, *हिस्ट्री* 4.64, 65,

75; हैंड्रिक्सन, 154 से लिया गया। [27]पीटर टी. ओ'ब्रायन, *कोलोसियंस, फिलेमोन,* वर्ड बिब्लिकल कमैंट्री, अंक 44 (वाको, टैक्सस: वर्ड बुक्स, 1982), 193. [28]ए. टी. रॉबर्टसन, *पॉल एंड द इंटलेक्चुअल्स: द एपिस्टल टू द कोलोसियंस,* संशो. एवं संपा. डब्ल्यू. सी. स्ट्रिकलैंड (नैशविल्ल: ब्रॉडमैन प्रैस 1959), 107. [29]वाल्टर बाउर, *ए ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामैंट एंड अदर अर्ली क्रिश्चियन लिटरेचर,* 3रा संस्क., संशो. व संपा. फ्रैडरिक विलियम डैंकर (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रैस, 2000), 861. [30]देखें 1 कुरिन्थियों 4:21; 2 कुरिन्थियों 10:1; गलातियों 5:23; 6:1; इफिसियों 4:2; 2 तीमुथियुस 2:25; तीतुस 3:2.

[31]बाउर, 612. [32]प्रेरितों 18:14; 2 कुरिन्थियों 11:1, 4, 19, 20; इफिसियों 4:2; 2 तीमुथियुस 4:3; इब्रानियों 13:22. [33]देखें रोमियों 12:17–21; 2 कुरिन्थियों 2:5–11; गलातियों 6:1, 2; फिलेमोन 17, 18. [34]रोमियों 15:7, 8; इफिसियों 5:2, 25, 29. [35]रोमियों 5:15, 18; 11:31; 1 कुरिन्थियों 2:11. [36]बाउर, 6. [37]''नये नियम में यदि *phileō* और *agapaō* के अनुवाद में अन्तर करना हो, तो फिलियो सम्भवतया मित्रता का प्रेम है और अगापे भक्तिपूर्ण प्रेम: परन्तु दोनों क्रियाओं के बढ़ने की प्रवृत्ति दिखाई देती है'' (जेम्स होप मोल्टन एंड जॉर्ज मिलिगन, *द वोकैब्लरी ऑफ द ग्रीक टैस्टामैंट* [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1930], 669–70)। [38]मत्ती 26:28; मरकुस 1:4; 3:29; लूका 1:77; 3:3; 4:18; 24:47; प्रेरितों 2:28; 5:31; 10:43; 13:38; 26:18; इफिसियों 1:7; कुलुस्सियों 1:14; इब्रानियों 9:22; 10:18. [39]डेविड एल. रोपर, *द लाइफ ऑफ़ क्राइस्ट, 1: ए सप्लीमेंट,* ट्रुथ फ़ॉर टुडे कमैंट्री (सरसी, आरकैंसा: रिसोर्स पब्लिकेशंस, 2003), 581. [40]मत्ती 28:20; यूहन्ना 12:50; 14:15, 21, 24; 15:10; 1 कुरिन्थियों 14:37; 1 यूहन्ना 2:3, 4; 3:22, 24; 5:2, 3.

[41]*द कम्पलीट शॉर्ट स्टोरीज़ ऑफ़ नथेनियल हाअथार्न* (गार्डन सिटी, न्यू यॉर्क: डबलडे एंड कं., 1959), 451 *में नथेनियल हाअथॉर्न, ''द ग्रेट स्टोन फेस।''*